सम्पादक
हारून रशीद
सहायक
मु0 गुफ़रान नदवी

कार्यालय
मासिक सच्चा राही
पोस्ट बॉक्स नं0 93
नदवतुल उलमा, टैगोर मार्ग,
लखनऊ – 226007
फोन : 0522–2740406
E-mail: sachcharahi2002@gmail.com
www.nadwatululema.org

सहयोग राशि

एक प्रति	₹ 30/-
वार्षिक	₹ 300/-
विदेशों में (वार्षिक) 50 यु.एस. डॉलर	

चेक/ड्राफ्ट पर यह लिखें
SACCHA RAHI

SACCHA RAHI
A/c. No. 10863759642
IFS Code: SBIN0000125
Swift Code: SBINNB157
State Bank of India,
Main Branch, Lucknow.

कृप्या पैसा जमा करने के बाद दफ़्तर के फोन नम्बर अथवा ई–मेल पर खरीदारी नम्बर के साथ अवश्य सूचित करें।

हिन्दी मासिक
सच्चा राही
सामाजिक एवं साहित्यिक लखनऊ

अप्रैल, 2021 वर्ष 20 अंक 02

शुक्रे नेअ़मत में न हो कोई कमी

आ गया अप्रैल जब ये आ गया
माहे गर्मा अब सरों पर आ गया
खाने पीने में करें अब एहतियात
पानी की कसरत रहे बा एहतियात
खीरा ककड़ी दे ख़ुदा खाते रहें
खाने में हम सब्ज़ियां खाते रहें
खाने में मिर्चा मसाला कम करें
मीट मछली का भी खाना कम करें
तंदुरुस्ती रब की नेअ़मत है बड़ी
शुक्रे रहमत में न हो कोई कमी

आपके पते के साथ जो खरीदारी नम्बर है अगर उसके नीचे लाल या काली लाइन है तो समझें कि आपका सालाना चन्दा ख़त्म हो चुका है। अतः आप जल्द ही अपना चन्दा भेजने का कष्ट करें। आप अपना पैसा दिये गये बैंक खाते में भी जमा कर सकते हैं। अथवा मनीआर्डर से भी भेज सकते हैं। मनीआर्डर के कूपन पर अपने खरीदारी नम्बर के साथ मोबाइल नम्बर अवश्य लिखें।

मुद्रक एवं प्रकाशक अतहर हुसैन द्वारा काकोरी आफसेट प्रिंटिंग प्रेस से मुद्रित एवं दफ्तर सच्चा राही नदवतुल उलमा, टैगोर मार्ग, लखनऊ से प्रकाशित।
Designing & Editing by: Qamaruzzama-9452295052

विषय एक दृष्टि में

क़ुर्आन की शिक्षा	मौ0 बिलाल अब्दुल ह़यी हसनी नदवी	05
प्यारे नबी की प्यारी बातें	अमतुल्लाह तस्नीम	07
माहे मुबारक के मामूलात	डॉ0 हारून रशीद सिद्दीक़ी	09
दीन व दुन्या का संगम	हज़रत मौ0 अबुल हसन अली नदवी (रह0)	10
मज़बूत इरादा व हिम्मत	हज़रत मौ0 सै0 मुहम्मद राबे हसनी नदवी	13
आसमानी दावत का नमूना	मौलाना सै0 मुहम्मद हमज़ा हसनी नदवी	16
शाने रिसालत में गुस्ताख़ी और	मौलाना डॉ0 सईदुर्रहमान आजमी नदवी	17
रमज़ान का मुबारक महीना	मुहम्मद गुफ़रान नदवी	21
आपके प्रश्नों के उत्तर	मुफ़्ती मुहम्मद ज़फ़र आलम नदवी	24
घरेलू मसायल	मौलाना मुहम्मद बुरहानुद्दीन संभली रह0	25
अब कोई अबला मरे नहीं	प्रोफेसर डॉ0 हैदर अली खाँ	28
कुछ रोज़ों के मुतअल्लिक़	फ़ौजिया सिद्दीक़ा	29
दूसरों की दया पर निर्भर न रहो	इं0 जावेद इक़बाल	32
क़िस्सा इब्राहीम अदहम का	उबैदुल्लाह मतलूब	34
क़िस्सा छूत–छात का	सम्पादक	35
औलाद की परवरिश का तरीक़ा	राशिदा नूरी	37
फ़र्ज़ वाजिब वगैरा का बयान	फ़ौजिया सिद्दीक़ा	40
अपील बराए तामीर	इदारा	41
उर्दू सीखिए	इदारा	42

क़ुर्आन की शिक्षा

—मौलाना बिलाल अ़ब्दुल ह़यी हसनी नदवी

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम

सूर-ए-अल आ़राफ़ :

अनुवाद–

और जब मूसा गुस्से और अफ़सोस में भरे हुए अपनी क़ौम के पास वापस आये[1] तो उन्होंने कहा तुम अपने पालनहार के आदेश का भी प्रतीक्षा न कर सके[2]और तख्तियाँ तो उन्होंने एक ओर रखीं और अपने भाई का सिर पकड़ कर अपनी ओर खींचने लगे, वे बोले ऐ मेरी माँ के बेटे[3]! क़ौम ने मुझे कमज़ोर समझा और करीब था कि वे मुझे मार ही डालते अब दुश्मनों से आप मेरा मज़ाक न उड़वाइए और न मुझे जालिमों में मिलाइए(150) उन्होंने कहा ऐ मेरे पालनहार! मुझे और मेरे भाई को माफ़ कर दीजिए और अपनी कृपा में हमें दाखिल कीजिए और आप सबसे बढ़ कर कृपा करने वाले हैं[4](151) बेशक जिन्होंने बछड़ा बनाया वे जल्दी ही अपने पालनहार के प्रकोप और दुन्या की ज़िन्दगी में अपमान का सामना करेंगे और हम झूठ गढ़ने वालों को ऐसी ही सज़ा देते हैं(152) और जिन्होंने बुराइयाँ कीं फिर उसके बाद तौबा कर ली और ईमान ले आये उसके बाद तो आपका पालनहार बहुत ही माफ़ करने वाला बड़ा दयालु है(153) और जब मूसा का गुस्सा ठंडा हुआ तो उन्होंने तख्तियाँ उठाईं और जो उसमें लिखा था उसमें उन लोगों के लिए हिदायत व दया थी जो अपने पालनहार से डरते हैं(154) और मूसा ने हमारे निर्धारित समय के लिए अपने क़ौम के सत्तर मर्दों को चुना, फिर जब उन्हें भूकम्प ने आ पकड़ा तो मूसा ने कहा कि ऐ मेरे पालनहार! अगर तू चाहता तो पहले ही उन्हें और मुझे बर्बाद कर देता, क्या तू हमारे नादानों की हरकत के कारण हक को बर्बाद कर देगा, यह तो तेरी ओर से परीक्षा है इससे जिसे चाहे तू गुमराह करे और जिसको चाहे हिदायत दे तू ही हमारा काम बनाने वाला है तू हमें माफ़ कर दे और हम पर दया कर और तू सबसे अच्छा माफ़ करने वाला है[5](155) और हमारे लिए इस दुन्या में भी भलाई लिख दे और आख़िरत में भी, हम तेरी ही ओर झुके और उसने कहा मैं अपने अज़ाब में जिसको चाहता हूं ग्रस्त करता हूं और मेरी रहमत हर चीज़ को अपने घेरे में लिए हुए है, बस मैं उसे उन लोगों के लिए लिख दूंगा जो डरेंगे और ज़कात अदा करेंगे और जो हमारी आयतों में विश्वास रखेंगे(156) जो उस रसूल का अनुसरण करेंगे जो

उम्मी[6] पैग़म्बर है जिसका वर्णन वे अपने पास तौरेत और इंजील में लिखा पाते हैं[7] जो उनको भलाई का आदेश देगा और उनको बुराई से रोकेगा और उनके लिए पवित्र चीज़ें हलाल करेगा और गंदी चीज़ें उन पर हराम करेगा और उनके साथ उतरा तो वही सफल होंगे[8](157) कह दीजिए कि ऐ लोगो! मैं तुम सब की ओर उस अल्लाह का पैगम्बर हूं जिसके पास आसमानों और ज़मीन की बादशाही है, उसके अलावा कोई पूज्य नहीं, वही जिलाता और मारता है, तो अल्लाह को मानो और उसके भेजे हुए उम्मी नबी को मानो जो अल्लाह पर और उसकी बातों पर विश्वास करता है और उसका अनुसरण करो ताकि तुम सही रास्ते पर आ जाओ(158) और मूसा की क़ौम में एक गिरोह वह भी है जो सत्य का रास्ता बताता है और उसी के अनुसार इन्साफ़ करता है[10](159)।

तफ़्सीर (व्याख्या):-

1. अल्लाह ने उन्हें बता दिया था कि सामरी ने तुम्हारी क़ौम को गुमराह कर दिया है।

2. जिसकी अवधि केवल चालीस दिन थी।

3. दया की भावना को उभारने के लिए ऐसा कहा वरना वे सगे भाई ही थे।

4. हज़रत हारून से गहन पूछ ताछ हज़रत मूसा ने इसलिए की कि वह उनके उत्तराधिकारी बना कर गये थे जब उनकी विवशता का ज्ञान हुआ तो हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम को शर्म आई और तख़्तियों को एक किनारे रख देने पर भी पछतावा हुआ तो अल्लाह से अपने लिए और अपने भाई के लिए क्षमा याचना की और तख़्तियाँ उठाईं और लोगों को समझाना बुझाना शुरु किया।

5. क़ौम ने हज़रत मूसा से कहा कि जब तक हम खुद अल्लाह की बात न सुन लेंगे न मानेंगे तो हज़रत मूसा ने सत्तर आदमियों को चुना और तूर पहाड़ पर ले गये अल्लाह ने प्रार्थना स्वीकार कर ली और उन्होंने कलाम सुन लिया फिर अल्लाह के दर्शन की फरमाइश कर दी इस पर तीव्र भूचाल आया और वे सब मुर्दा जैसे हो गए इस पर हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम ने दुआ की जो अल्लाह ने स्वीकार कर ली और सब कुशल मंगल उठ खड़े हुए, इसका वर्णन पहले गुज़र चुका है ''सुम्म बअस्ना कुम मिम् बादि मौतिकुम ल अल्लकुम तश्कुरून'' फिर तुम्हारे मरने के बाद हमने तुम्हें फिर उठा दिया ताकि तुम आभारी बनो।

6. हज़रत मूसा अलै0 ने दुन्या व आख़िरत के लिए जो दुआ की थी वह बनी इस्राईल की अगली नस्लों के लिए भी थी इसलिए अल्लाह तआला ने उसको स्वीकार करने के समय स्पष्ट कर दिया कि बनी इस्राईल के जो लोग मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का ज़माना पाएंगे उनको यह भलाई इस रूप में मिल सकेगी जब वह नबी–ए–उम्मी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम पर ईमान लाए फिर आगे आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के गुणों का उल्लेख है, ''उम्मी'' या तो ''उम'' से सम्बन्ध रखता है

शेष पृष्ठ .....15....पर

प्यारे नबी की प्यारी बातें

—अमतुल्लाह तस्नीम

फैसला करने का सवाबः–

हज़रत अम्र बिन आस रज़ि0 से रिवायत है कि मैंने हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से सुना है, फरमाते थे कि फैसला करने वाला जब अपने सोच विचार से फैसला करता है और फैसला ठीक होता है तो उसको दोहरा अज्र मिलता है और ग़लत हो जाता है तो भी एक अज्र ज़रूर मिलता है। (बुख़ारी—मुस्लिम)

बुखार की गर्मी :–

हज़रत आयशा रज़ि0 से रिवायत है कि नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया, बुखार जहन्नम की गर्मी से है, उसको पानी से ठंड़ा करो।

(बुखारी—मुस्लिम)

मय्यत के क़ज़ा रोज़ेः–

हज़रत आयशा रज़ि0 से रिवायत है कि हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया मय्यत पर कोई रोज़ा बाक़ी हो तो उसके वारिस को रखना चाहिए।

(बुख़ारी—मुस्लिम)

अल्लाह के रास्ते में खर्च करने का इशाकः–

हज़रत औफ बिन मालिक बिन तुफैल रज़ि0 से रिवायत है कि हज़रत आयशा रज़ि0 से किसी ने कहा कि तुम्हारे भांजे अब्दुल्लाह बिन ज़ुबैर कहते हैं कि खाला एहतियात इंतेजाम से काम लें वरना मैं उन पर पाबन्दी लगा दूंगा, और उनके माल को अपने निज़ाम में ले लूंगा, कहने लगीं कि सच में उसने ऐसा कहा है? कहने वाले ने कहा हाँ, कहा मैं क़सम खा कर कहती हूं कि उससे कभी न बोलूंगी, जब इस नाराज़गी को एक ज़माना हो गया तो हज़रत अब्दुल्लाह रज़ि0 को बड़ी फिक्र पैदा हुई और उन्होंने सिफारिश कराई लेकिन वह ना मानीं, क़सम का उज्र फरमा दिया, हज़रत अब्दुल्लाह रज़ि0 बहुत परेशान हुए, फिर उन्होंने मिस्वर बिन मखरमा और अब्दुर्रहमान बिन अस्वद अब्दे यगूस से बात चीत की, और कहा मैं तुम दोनों को क़सम दे कर कहता हूं कि जब तुम हज़रत आयशा रज़ि0 के पास पहुंचना तो उन से कहना कि यह उनके लिए जायज़ नहीं कि वह मुझ से बोलना छोड़ दें, जब यह लोग वहां पहुंचे तो हज़रत आयशा रज़ि0 से अन्दर आने की इजाज़त मांगी, कहा अस्सलामु अलैकुम व रहमतुल्लाहि व बरकातुहु क्या हम अन्दर आ सकते हैं, हज़रत आयशा रज़ि0 ने इजाज़त दे दी, उनको ख़बर न थी कि अब्दुल्लाह रज़ि0 भी उनके साथ हैं, जब वह अन्दर आ गये तो हज़रत अब्दुल्लाह रज़ि0 भी आये और पर्दे में जा कर झट खाला से लिपट गये, और

कसमें देते जाते थे और रोते जाते थे, इधर यह दोनों लोग भी ज़ोर दे रहे थे कि उनकी तौबा कबूल कर लो फिर रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के इरशादात दोहराये कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया है कि किसी मुसलमान को जायज़ नहीं कि वह अपने मुसलमान भाई से तीन दिन से ज़ियादा बोलाना छोड़ दे, जब उन्होंने बहुत ज़ियादा जोर दिया तो हज़रत आयशा रज़ि0 भी उनको समझाने लगीं और रोती जाती थीं और कहती थीं कि मैंने क़सम खाई है और क़सम का तोड़ना भी सख्त गुनाह है। मगर वह दोनों लोग बराबर सिफारिश करते रहे, आखिरकार दोनों लोगों की सिफारिश और हज़रत अब्दुल्लाह रज़ि0 की बेक़रारी से मुतअस्सिर हो कर भांजे से बोल दीं लेकिन इस क़सम के तोड़ने का इतना अफसोस था कि कफ़्फ़ारे में चालीस ग़ुलाम आज़ाद किये, फिर भी क़रार न हुआ जब क़सम तोड़ने का ख़्याल आता तो इतना रोती थीं कि आंसुओं से आंचल भीग जाता था। (बुखारी)

गुनाह के नज्र को पूरा करना ज़रूरी नहीं:-

हज़रत आयशा रज़ि0 से रिवायत है कि नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया कि जो शख़्स अल्लाह की इताअ़त की नज्र माने तो वह उसको ज़रूर पूरा करे और जो गुनाह की नज्र माने तो यह नज्र ठीक नहीं, हरगिज़ वह काम न करे। (बुख़ारी)

हज़रत उम्मे शरीक रज़ि0 फरमाती हैं कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने उन्हें गिरगिट को मारने का हुक्म दिया है और आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया कि वह हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम पर (जब वह आग में डाले गये थे) फूँक रहा था।

(बुख़ारी–मुस्लिम)

❖❖❖

–प्रस्तुति–

जमाल अहमद नदवी सुलतानपुरी

नमाज़े तरावीह-अहले सुन्नत

–इदारा

रोज़ा रखो पढ़ो तरावीह
बीस रकातें पढ़ो तरावीह
आठ पढ़ें जो पढ़ने दो
सवाब भी इसका तुम तो लो
आठ को बिद्अ़त कहो नहीं
वह बीस को बिद्अ़त कहें नहीं
बाहम हुब्ब रहे बाक़ी
ताकि खुश रहे साक़ी
पढ़ना फर्ज़ जमाअ़त से
रखना उन्स तिलावत से
अह्ले सुन्नत पाँच हैं
दीन के मसलक पाँच हैं
अव्वल हनफ़ी दोम मालिकी
सोम शाफई चार हम्बली
अह्ले ह़दीस पंजुम हैं
दीन के यह सब अंजुम हैं
आपस में यह लड़ें नहीं
बुरा किसी को कहें नहीं
रब की रस्सी छोड़ें ना
मुँह दीन से हरगिज़ मोड़ें ना
रब से दुआ़ ये करें सदा
सीधा रस्ता हम को दिखा
हुब्बे नबी दे हमें वदूद
प्यारे नबी पर पढ़ें दुरूद

❖❖❖

माहे मुबारक के मामूलात

—डॉ0 हारून रशीद सिद्दीक़ी

शाम के वक़्त जैसे ही मालूम हो कि रमज़ान शुरुअ़ हो गया दिल में ख़ुशी महसूस करें लोगों को मुबारक बाद दें अपने ज़रूरी कामों से फ़ारिग़ हों चाहें तो खाना भी खा लें वरना इशा बाद खाएं इशा की नमाज़ के लिए तैयार हो जाएं जमाअ़त से नामज़ पढ़ें वित्र भी जमाअ़त से पढ़ें उम्मत के लिए, मुल्क के लिए ख़ूब दुआ़एं मांगें पहले खाना न खाया हो तो अब खाना खा लें सुब्ह को रोज़ा रखने के नीयत करें रमज़ान के रोज़े की नीयत हर रात मग़रिब बाद किसी वक़्त कर लेनी चाहिए, अगर रह जाये तो दिन में दस ग्यारह बजे तक नीयत कर लेनी चाहिए याद रहे रमज़ान के रोज़े की नीयत हर रात एक ही रोज़े की कर सकते हैं एक साथ एक से ज़ियादा रोज़ों की नीयत नहीं कर सकते।

अल्लाह तौफ़ीक़ दे सहरी खाएं कुछ नफ़्ल नमाज़े पढ़ लें सुब्ह सादिक़ से रोज़े की पूरी पाबन्दी करें रोज़ा तोड़ देने वाली चीज़ें या मकरूह कर देने वाली चीज़ों से पूरी तरह बचें फ़ज्र की नमाज़ जमाअ़त से पढ़ें नींद आ रही हो तो सो जाएं वरना तिलावत करें फज्र बाद तिलावत ना कर सकें तो दिन में तिलावत और दुरूद शरीफ़ पढ़ने का कोई वक़्त मुकर्रर करें लोगों से नर्मी से मिलें किसी से लड़ाई झगड़ा न करें, अगर कोई झगड़े तो कह दें मैं रोज़े से हूं हर तरह के गुनाहों से बचें ख़ास तौर से ग़ीबत से बचें।

अगर अल्लाह ने माल दिया हो तो अपने माल की ज़कात निकाल कर ग़रीबों तक पहुंचा दें इस लिए कि रमज़ान में हर नेकी का सवाब सत्तर गुना मिलता है। फ़ित्रे का सद्क़ा भी आख़िर रमज़ान में दे कर सत्तर गुना सवाब लें।

जो काम रोज़ाना का मामूल हो, रोज़गार है, दुकान है वगैरह करते रहें अगर किसी ऑफिस में नौकर हों तो वहां भी बड़ी पाबन्दी से काम करें यहां तक कि दूसरे साथी महसूस करें कि आदमी बहुत नेक लग रहा है।

शाम को इफ़्तार करें हलाल रोज़ी खाएं हराम से पूरी तरह बचें किसी की बहन बेटी पर बुरी नज़र न डालें हो सके तो दूसरों को इफ़्तार करायें रमज़ान में दुआएं ख़ूब करें, अगर इस तरह रमज़ान का हर दिन गुज़ारें तो इन्शाअल्लाह रमज़ान की बरकत से महरूम न रहेंगे, अल्लाह तआ़ला हम सब को रमज़ान की बरकात से नवाज़े आमीन।

❖❖❖

दीन व दुन्या का संगम

—हज़रत मौलाना अबुल हसन अली नदवी (रह0) — अनुवादकः मुहम्मद हसन अंसारी

प्राचीन धर्मों और विशेषकर ईसाई धर्म ने मानव—जीवन को दो हिस्सों में बाँट रखा था जिसमें एक दीन के लिए और दूसरा दुन्या के लिए निर्धारित था। इसी प्रकार इस वसुन्धरा को भी दो कैम्पों में विभाजित कर दिया गया था। एक कैम्प दीनदार लोगों का था, दूसरा दुन्यादार लोगों का। और यह दोनों कैम्प केवल अलग ही न थे बल्कि उनके बीच एक बड़ी खाई थी दोनों के बीच लोहे की एक दीवार खड़ी थी और दोनों में रस्साकशी जारी थी। हर एक का विश्वास था कि दीन व दुन्या के बीच हमेशा का दुराव है। इसलिए यदि कोई एक से सम्बन्ध रखता है तो उसके लिए दूसरे से सम्बन्ध विच्छेद करना अनिवार्य है। क्योंकि उनके कहने के अनुसार एक समय में दो नावों पर सवार नहीं हो सकते हैं। और आर्थिक समृद्धि पारलौकिक जीवन (आख़िरत) और सृष्टि के निर्माता की ओर से आँख बन्द किये बिना नहीं प्राप्त हो सकती। इसी प्रकार शासन और साम्राज्य को धार्मिक व नैतिक शिक्षाओं तथा ईश्वर के भय से अलग रख कर ही बाक़ी रखा जा सकता है। और यह कि धार्मिक जीवन सन्यास के बिना व्यतीत नहीं किया जा सकता।

वस्तुतः मानव प्रकृति सुविधा—प्रिय है और जो धर्म भी जायज़ चीज़ों से फायदा उठाने और उत्थान व सम्मान, शक्ति व शासन प्राप्ति की इजाज़त नहीं देता वह प्रायः मानव—जाति के लिए अनुकूल नहीं होता और सद्बुद्धि से खैंचतान तथा मनुष्य की जन्मजात ज़रूरतों पर पाबन्दी का रूप धारण कर लेता है। फलतः बुद्धजीवी वर्ग की बड़ी संख्या ने दुन्या को दीन पर प्राथमिकता दी और वह इसे समाज की एक ज़रूरत समझ कर सन्तुष्ट हो गये और भौतिक विकास में लग कर आनन्द विभोर हो उठे और आध्यात्मिक विकास की अनदेखी कर दी। धर्म का परित्याग करने वाले अधिकतर लोगों ने दीन व दुन्या के विरोधाभास को वास्तविकता समझ कर ऐसा किया, और धार्मिक नेतृत्व करने वाले वर्ग ने कलीसा (गिरजा) के विरुद्ध बग़ावत कर दी। और उसने अपने को तमाम वन्धनों से मुक्त कर लिया। इसके फलस्वरूप तार्किक रूप से हुकूमतें भी उस मस्त हाथी की तरह हो गयीं जो ज़ंजीरें तोड़ चुका हो अथवा उस ऊँट की तरह जो बे नकेल हो चुका हो।

दीन व दुन्या के इस दुराव ने बेदीनी का द्वार खोल दिया। नास्तिकता का पहला शिकार योरोप और उसके बाद वे देश हुए जो चिन्तन, ज्ञान और संस्कृति के मैदान में उसके अनुयायी बने अथवा उससे प्रभावित हुए।

वस्तुस्थिति को ईसाई कहर पन्थियों ने और विगाड़ दिया। वह मनुष्य की जन्मजात ज़रूरतों को आत्मा की सफाई और ईश्वर के सानिध्य की राह में सबसे बड़ी रुकावट समझते थे, और जिन्होंने उसे गुमराह करने और कठोरतम आदेशों व निष्ठुर शिखा के द्वारा उसे दण्डित करने में कोई कसर नहीं उठा रखी थी। उन्होंने दीन को ऐसे डरावने व घिनौने रूप में प्रस्तुत किया जिससे उसके मानने वालों के रोंग्टे खड़े हो जाते थे। फलतः धर्म का प्रभाव क्षेत्र सिमटने लगा। अहंवाद अपने चरमसीमा पर पहुंच गया। और दुन्या दो विरोधी पहलुओं के बीच डोलने लगी और फिर नास्तिकता, अधर्म और सामान्य नैतिक पतन के गर्त में गिर गई।

इस्लाम ने बताया कि कर्म व आचरण की धरोहर की खोज ही मानव जीवन का लक्ष्य है और जिसकी आधारशिला 'नीयत' (संकल्प) है। इस्लामी शरीअत ने बताया कि 'कर्म का दारोमदार (निर्भरता) नीयत पर है। और हर व्यक्ति को वही मिलेगा जिसकी उसने नीयत की होगी।' हर वह कर्म जो इन्सान अल्लाह की मर्ज़ी के लिए निष्ठापूर्वक और उसके आदेशों के परिपालन के विचार से करता है, उसके लिए ईश्वर के सानिध्य तथा ईमान व आस्था के उच्च शिखर तक पहुंचने का साधन बनता है। और वही यह विशुद्ध धर्म है जिसमें कोई दुन्यावी मिलावट भी नहीं होती। इसमें हर प्रकार के कर्म सम्मिलित हैं, जैसे जिहाद (संघर्ष), प्रशासन, सांसारिक आनन्द का उपभोग, जन्मजात ज़रूरतों की पूर्ति, रोज़ों की तलब, जायज़ मनोरंजन, व्यक्तिगत दाम्पति जीवन और हर उपासना व धार्मिक सेवा।

इसके विपरीत यही चीज़ें उस समय 'दुन्यादारी' में दाख़िल हो जाती हैं जब इनमें अल्लाह की रज़ा और उसके आदेशों के परिपालन की नीयत शामिल न हो, बल्कि उनका उद्देश्य ग़ैरुल्लाह हो और उन पर असावधानी का पर्दा पड़ा हो, ऐसी दशा में नमाज़, हिजरत व जिहाद, ईश्वर की याद भी दुन्या की अमल बन जाती है। और आदमी के लिए यह कर्म पुण्य के बजाय पाप बन जाते हैं। और इश्वर से दुराव का कारण बन जाते हैं।

मध्ययुग में ईसाई दुन्या का एक भीषण खैंचतान का शिकार थी। एक तरफ धर्म का नेतृत्व कलीसा कर रहा था जिसकी बुन्याद 'रहबानियत' पर थी दूसरी तरफ़ हुकूमत थी जो शौर्य व सम्मान व्यक्त करने का

साधन थी। उनके बीच ऐसी रस्साकशी हुई कि अन्ततः धर्म व राजनीति अलग–अलग हो गये जिसका परिणाम सब को मालूम है और दुन्या अब तक उसकी सज़ा भुगत रही है। और इस रास्ते में ठोकरें खा रही हैं।

वियोग नहीं संयोगः–

हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने दीन व दुन्या के बीच इस विशाल खाड़ी को पाट दिया और आपस में जूझ रहे, 'दीनदार' और 'दुन्यादार' के कैम्पों को सुलह सफाई और प्रेम के साथ आपस में मिला दिया। और शन्ति व एकता के साथ जीना सिखा दिया। आपकी इस महान कृत के कारण आपको 'रसूले वहदत' (वहदत के रसूल) और 'बशीर' व 'नज़ीर' कहा जाता है। आपने मानव जाति को दो युद्ध में रत मोर्चों से उठा कर ईमान, मानव प्रेम और ईश्वर की इच्छा के मोर्चे पर लगा दिया। और हमें यह भरपूर दुआ सिखा दीः–

अनुवादः–*''ऐ हमारे पालनहार! हमें दुन्या में भी भलाई दे और आख़िरत में भी भलाई दे, और हम को दोजख़ (नर्क) के अज़ाब (अभिशाप) से सुरक्षित रख।''*

(सूरः बक़र : 201)

क़ुर्आन एलान करता हैः–

अनुवादः–*''कह दो कि मेरी नमाज़ और मेरी इबादत और मेरा जीना और मेरा मरना सब अल्लाह के लिए है जो सारे जहान का पालनहार है।''*

(सूरः अन्आम–162)

मुसलमान का जीवन विभिन्न विरोधी इकाइयों का योग नहीं बल्कि यह एक ऐसी परिपूर्ण इकाई है जिसमें उपासक की आत्मा क्रियाशील है और उसका नेतृत्व 'अल्लाह पर ईमान' और 'उसकी आज्ञापालन' की भावना के हाथ में है। और वह जीवन के सभी संकायों तथा श्रम व कर्म के सारे मैदानों को अपनी परिधि में लेती है, शर्त यह है कि वह सच्ची नीयत से अल्लाह की रज़ा के लिए और नबियों के तरीके पर हों।

अल्लाह के रसूल सल्ल0 ने 'दीन' व 'दुन्या' के अलग–अलग होने के दृष्टिकोण को ग़लत बताया और पूरे जीवन को इबादत और सारी ज़मीन को सज्दागाह बना दिया और इन्सान को आपस में जूझ रही छावनियों से निकाल कर सत्कर्म, मानव सेवा और अल्लाह की रज़ा की तलाश में मोर्चे पर ला खड़ा किया जहां के बादशाह आपको फ़कीरों की गुदड़ी में, इबादत गुज़ार व परहेज़गार बादशाहों व अमीरों की पोशाक में नज़र आयेंगे जो सहनशीलता के पहाड़, ज्ञान व दर्शन के स्रोत, रात के इबादत गुज़ार और दिन के शहसवार होंगे। और उनके व्यक्तित्व में कोई विरोधाभास और विषमता नज़र नहीं आयेगी।

❖❖❖

मज़बूत इरादा व हिम्मत और लगातार अमल

—हज़रत मौलाना सै0 मु0 राबे हसनी नदवी

जगनायक हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने मुस्लिम समुदाय की रहनुमाई की बागडोर ऐसे गंभीर और कठिनाइयों से भरे हुए दौर में संभाली थी जबकि यह अमर समुदाय संसाधनों से वंचित और उनको हासिल करने के साधनों से खाली था, लेकिन दूसरी तरफ़ इस ज़िन्दा क़ौम को सर्वशक्तिमान ख़ुदा ने मानव प्रकृति की ताक़त और काम की प्रतिभा की वह अहम कुंजी दी थी, जो फ़ौलादी ताक़तों से भी महा शक्तिशाली थी, इसके विपरीत फ़ारस व रोम और आसपास के दूसरे देशों में तमाम भौतिक और ज़ाहिरी संसाधन उपलब्ध थे जो अभी भी ताक़त व शक्ति का स्रोत समझे जाते हैं, लेकिन जब इस्लाम जैसी महान शक्ति का सामना हुआ तो झूठी ताकतों के मनमोहक क़िले रेत की दीवार की तरह धराशायी हो गये और मुसलमानों ने अपने संसाधनों की कमी, संकट, ज्ञान विज्ञान और सभ्यता व संस्कृति की कमी के बावजूद बड़े से बड़े असत्य के मज़बूत किलों को ध्वस्त कर दिया और भौतिकतावादियों की आश्चर्य जनक शान व शौक़त का मुकम्मल ख़ातिमा कर दिया, यह एक शिक्षा प्रद बात है कि रोम व ईरान भौतिकता के घातक रोग कैंसर का शिकार और मैदाने अमल में ऐसे अपाहिज हो गये थे जो उनके लिए हक़ीक़त में मौत का पैगाम था, यहीं से ये हक़ीकत बिल्कुल ख़ुल कर सामने आ जाती है कि इन जंगल में रहने वालों की कामयाबी और रोम ईरान जैसे सभ्य देशों की पराजय, ज्ञान—विज्ञान से अनभिज्ञ, ऊँटवानों का विजय और ज्ञान व विज्ञान से मालामाल, भौतिकता वादियों की नाकामी का राज़, जादुई संस्कृति और सभ्यता की तरक़्क़ी और अय्याशी के संसाधनों की प्रचुरता में निहित नहीं, बल्कि असली ताक़त व हिम्मत लगातार काम करने में है, जिससे इन्कार करना ज़िन्दगी की कश्ती को तूफ़ानी भंवर में ढकेल देने जैसा होगा, यह एक ऐसी हक़ीक़त है जिसका इन्कार मुमकिन नहीं है कि आज की चकाचौंध से परिपूर्ण संस्कृति ने सारी दुन्या की मानव जाति के चैन व सुकून को छिन्न—भिन्न कर दिया है और विनाश की ऐसी कगार पर पहुंचा दिया है जहां मौत खड़ी इन्तेज़ार कर रही है। आज की यह तथाकथित सभ्य क़ौमें और मशीनी इन्सान अपने आप धोखे में

पड़ा है, कि यह भयानक संस्कृति उसे विनाश से बचा लेगी, और इन्सानीयत की डूबती कशती को किनारे लगा देगी, लेकिन काश यह हक़ीकत होती, यह कोई ख़याली बात नहीं, बल्कि यह एक ठोस हक़ीक़त है, इतिहास गवाह है कि आज से सदियों पहले मुसलमान और अरब की सभ्यता और संस्कृति के बाग़ में बहार आई हुई थी।

मुसलमानों के ज्ञान विज्ञान का दौर दौरा था, और सारी दुन्या को मुसलमानों की ताक़त के सामने झुकना पड़ा था, लेकिन बाद में दुन्या ने यह भी देखा कि उनकी सभ्यता और संस्कृति, ज्ञान विज्ञान और भौतिक शक्तियाँ उन्हें खूँखार तातारियों के हैवानियत भरे हमलों से नहीं बचा सकीं और देखते ही देखते बग़दाद जैसा निहायत हसीन शहर जो ज्ञान विज्ञान, सभ्यता व संस्कृति का प्रकाश स्तम्भ समझा जाता था, वीरान और बरबाद हो गया और उसका वह चमन जिसमें बहार आई हुई थी देखते ही देखते उसमें ऐसा पतझड़ आया कि दुबारा बहार लौट न सकी।

इसके अलावा बहुत सी ऐसी शिक्षाप्रद घटनायें हैं जो इस हक़ीक़त की तरफ़ इशारा करती हैं, कि सिर्फ़ सभ्यता व संस्कृति की चमक दमक, ज्ञान विज्ञान की रंगा रंगी, और पिछले इतिहास की शान व शौकत मानव जाति को असली कामयाबी नहीं दिला सकती, जब तक कि उसका दिलो दिमाग, हिम्मतो हौसला, निष्ठा व कर्म, दूरदर्शिता और उच्च कर्म उसमें मौजूद न हो, अफ़सोस कि आज पूरब के लोग ज़ाहिरी ख़ूबसूरती और आकर्षक सभ्यता की चमक दमक से इस तरह प्रभावित नज़र आते हैं कि मौजूदा दौलत की रेस वाली मानसिकता ने उन्हें आला और स्वस्थ्य मूल्यों से वंचित कर दिया हैं जहां तक विकसित देशों का सम्बन्ध है तो उनकी सारी क्षमतायें उन भौतिक ज्ञान प्राप्ति में लग रही हैं जो उनकी ज़रूरतों को पूरा कर सकें। इसके विपरीत विकसित देश अपनी सारी क्षमता या तो संस्कृति की बाहरी चमक दमक के हासिल करने में लगा रहे हैं या फिर हाथ पर हाथ धरे कल पर नज़र रखे हुए हैं, जब कि विकास, सांस्कृतिक साहित्यक और वैचारिक रूप से पश्चिम का बिल्कुल मोहताज नहीं, जब कि यह एक सच्चाई है कि उधार संस्कृति किसी तरह भी फ़ायदेमन्द नहीं हो सकती है, पूर्वी क़ौमें विशेष रूप से मुस्लिम क़ौम उसी वक़्त कामयाबी हासिल कर सकती है जबकि आंतरिक ऊर्जा के साथ साथ *''समझदारी ईमान वाले की खोई हुई चीज़ की तरह है, लिहाज़ा वह जहां कहीं भी उसे मिले उसे हासिल करने का हक ईमान वाले को ज़ियादा है''* इसको सामने रखते हुए मौजूदा विकसित क़ौमों से ऐसे अनुभव हासिल करे जो

किसी भी विकासशील क़ौम के लिए ज़रूरी हो सकते हों।

आज हम तकनीकी, आर्थिक और राजनैतिक क्षेत्र में पश्चिम से बहुत पीछे हैं, इसका एक मात्र कारण यह है कि हमने व्यवहारिक क़दम इस हिम्मत और दृढ़ इच्छा–शक्ति के साथ नहीं उठाया जो किसी भी विकसित क़ौम के लिए ज़रूरी है।

जब तक हम निष्ठा व मरदानगी, हिम्मत व हौसला, नैतिक मूल्यों और बलन्द किरदारी का नमूना दुन्या वालों के सामने पेश नहीं करेंगे, तब तक हम न तरक्क़ी के कठिन और मुश्किल रास्ते को तय कर सकते हैं और न बलन्द मक़सद पूरे कर सकते हैं। आज मुसलमानों ने ग़ैर ज़िम्मेदाराना और बेमक़सद ज़िन्दगी सांस्कृतिक और वैचारिक खोखलेपन के कारण अपने भविष्य की गाड़ी को ऐसे भयानक डगर पर डाल दिया है जो किसी वक़्त भी विनाश की गहरी खाई में गिर सकती है। लिहाज़ा मिल्लत के रहबरों और क़ौम के लीडरों पर यह ज़िम्मेदारी आयद होती है कि व स्वार्थ और अवसरवाद की पसतियों से बुलन्द हो कर इस उम्मत को विनाश की खाइयों में गिरने से बचायें, कहीं ऐसा न हो कि अपने दुशमनों की चाल में फंस कर हमेशा हमेश के लिए अपनी पहचान खो बैठें।

❖❖❖

कुर्आन की शिक्षा .....

कि जिस प्रकार बच्चा मां के पेट से पैदा होता है किसी का शिष्य नहीं होता उसी प्रकार आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम किसी के शिष्य नहीं लेकिन ज्ञान, विद्या और तत्थ्य तथा रहस्य व वास्तविकताओं की वे चीज़ें बतायीं कि किसी भी प्राणी में इतनी शक्ति नहीं कि उनको बता सके। इसलिए आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को ''उम्मी'' कहा गया या ''उम्मुल कुरा'' की ओर संबंध हो जो कि मक्का मुअज़्ज़मा का उपनाम है और आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की जन्म स्थली थी।

7. आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के आगमन का शुभ संदेशों और गुणों और विशेषताओं का उल्लेख सब आसमानी किताबों में किया गया है और हजार काट छांट के बावजूद अब भी बाईबिल आदि में बहुत से संकेत पाये जाते हैं।

8. यहूदियों पर जो उनकी अवज्ञा की वजह से आदेश कठोर कर दिये गये थे इस दीन में वह सारी चीज़ें आसान हुईं और जो अपवित्र चीज़ें उन्होंने हलाल कर रखी थीं उनका हराम होना आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने ज़ाहिर कर दिया, अतः बहुत से बोझ हलके कर दिये गये और बहुत से प्रतिबन्ध उठा लिए गये।

9. इसका मतलब वही है।

10. अधिकतर तो वे नहीं मानते लेकिन कुछ मानने वाले भी हैं जैसे अब्दुल्लाह पुत्र सलाम आदि।

❖❖❖

–प्रस्तुति–

जमाल अहमद नदवी सुलतानपुरी

आसमानी दावत का नमूना बनने की ज़रूरत

—मौलाना सै0 मु0 हमज़ा हसनी नदवी

आसमानी शिक्षाएं हों या सही दीनी दावत, आला से आला ज़िन्दगी गुज़ारने के नियम हों या ज़िन्दगी गुज़ारने के बेहतरीन क़ानून, ये उसी समय क़ायम रह सकते हैं और मार्ग दर्शन कर सकते हैं जब उन की ओर बुलाने वाले उन पर अमल कर के नमूना पेश करें अगर अमली नमूने की ज़रूरत न होती, सिर्फ फ़लसफ़े से और ज़बान से बयान कर देने से काम चल सकता तो इन आसमानी शिक्षाओं का सिर्फ एलान कर दिया जाता, लेकिन होता इसके विपरीत है।

अल्लाह तआला ने पहले रसूलों को पैदा फ़रमाया जिन्होंने उन शिक्षाओं और अल्लाह के आदेशों पर पहले खुद अमल करके पूरी दुन्या के लोगों के लिए अमली नमूना पेश किया, इबादत, मुआमलात, हुकूमत गरज़ इन्सानी ज़िन्दगी के सारे क्षेत्रों में उन रसूलों की ज़िन्दगी से मार्गदर्शन मिला, और यह सिलसिला सिर्फ़ रसूलों तक सीमित नहीं रहा बल्कि उन रसूलों के साथ देने वाले हवारी और सहाब—ए—किराम रज़ि0 भी इस राह पर मज़बूती के साथ जमे रहे, और उन्होंने अपने ज़माने और आने वाली नस्लों के लिए अमली नमूने पेश किये, इस तरह उन्होंने यह साबित किया कि इन आसमानी शिक्षाओं पर सिर्फ़ रसूल ही नहीं, बल्कि हर इन्सान मुकम्मल तौर पर अमल कर सकता है।

सहाब—ए—किराम रज़ि0 के बाद मुस्लिम क़ौम की दूसरी बुज़ुर्ग हस्तियों जिनमें हदीस शरीफ व फिक़्ह के इमाम, मुजाहिदीने इस्लाम, और दीन व मिल्लत के बड़े उलमा शामिल हैं, ने इस ज़िम्मेदारी को निभाया और अपने अपने ज़माने में पूरी मानव जाति को अमली दावत पेश की और यह साबित किया कि यह दीन और आसमानी शिक्षाएं हर दौर और हर नस्ल के लिए अमल के क़ाबिल और नजात का ज़रिया हैं।

आज भी ज़रूरत है कि हर मुसलमान अपनी ज़िन्दगी को उस आसमानी दावत का नमूना बनाये और सर से पैर तक दावत का अमली नमूना बन जाये तभी इस काल की तारीकी दूर होगी और ईमान का नूर पूरी दुन्या को रौशन कर के उसे ज़ुल्म व अज्ञानता से नजात दिलायेगा।

❖❖❖

शाने रिसालत में गुस्ताख़ी और हमारा रवय्या

—मौलाना डॉ0 सईदुर्रहमान आजमी नदवी

—हिन्दी इम्लाः हुसैन अहमद

रबीउल—अव्वल का महीना पूरी दुन्या के मुसलमानों के लिए जश्न बहारां है, इस मौक़े पर रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की सीरत को बयान करने के लिए भिन्न—भिन्न प्रोग्रामों को तरतीब देते हैं, और उस अज़ीम शख़्सियत की मदह व सताइश करते हैं, जिन की आमद पूरे आलम के लिए बाइसे रहमत है, और जिन की बेसत सरचश्म—ए—हिदायत है, और उन पर लाखों करोड़ों दुरूद सलाम पेश करते हैं।

एक तरफ़ यह सूरते हाल है, तो दूसरी तरफ़ दुश्मनाने इस्लाम की तरफ़ से उस ज़ात के खिलाफ़ जिनके लिए दिल दिमाग़ फ़र्श राह है, प्रोपेगण्डा किया जा रहा है, आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के विवादास्पद कार्टून बना कर फैलाये जा रहे हैं, पिछले महीनों में फ्रांस ने हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की विवादास्पद तस्वीरों को छाप करके बड़ी गुस्ताखी का मुज़ाहरा किया, जिसकी वजह से पूरा आलमे इस्लाम सरापा एहतिजाज था, उसने फ्रांस की मसनूआत और प्रोडक्स के बाईकाट का फैसला किया, और हर सतह पर उस हरकत की मज़म्मत की।

आज इलहादी फ़िक्र के हामिल अफ़राद आज़ादिये इज़हारे राय के दर परदा अपनी इस्लाम दुश्मनी की बिना पर मुसलमानों को तकलीफ़ देने के लिए वह सब हर्बे इस्तेमाल कर रहे हैं, जिन से उन के कलेजे ठंडे हों, इस वाक़िआ से यह साफ़ हो जाता है कि दुन्या में बाज़ अफ़राद ऐसे हैं जो इस्लाम और ख़ातमुन्नबीयीन पैग़म्बर मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से न सिर्फ़ नफ़रत करते हैं, बल्कि डंके की चोट पर यह ऐलान करते हैं कि खुर्शीदे इस्लाम गुरूब हो चुका है। उस पर रजअ़त पसन्दी का जंग लग चुका है, वह इन्सानों पर तरह—तरह की पाबन्दियाँ आइद करता है, इसलिए ऐसी बंदिशों के बाद हम इस्लाम को कैसे पसंद कर सकते हैं?

यह बे बुन्याद दलील सिर्फ उस नज़रिया की अक्कासी करती है कि इन्सान को अखलाक़े आलिया से आज़ाद हो कर ज़िन्दगी गुज़ारनी चाहिए, ख़्वाह वह ज़िन्दगी जानवरों ही की क्यों न हो, और जाती ज़िन्दगी के मुकाबला में हर मज़हब, हर राय और हर क़िस्म का नज़रिया महज़ फ़ुज़ूल है, चूंकि इन्सान नेमते अ़क़्ल से माला माल और शऊर व एहसास की कैफ़ियतों से वाकिफ है, इसलिए वह माद्दी लज़्ज़तों से इस्तिफ़ादा का ज़ियादा हक़दार है, जब कोई इस तरह के नज़रिया का हामिल होता है, तो उस की तबीअ़त सच्चाई से दूर हो जाती है, और उसका आशय महज़ ख़्वाहिशे नफ़्स की इत्तिबा होती है, अल्लाह तआ़ला ने ऐसे लोगों को इस तरह ख़िताब किया है, इरशाद बारी तआ़ला हैः—

"ऐ इन्सान! तुझे आख़िर किस चीज़ ने अपने परवरदिगार से मुतअल्लिक़ भूल में डाल रखा है, वह परवरदिगार जिसने तुझे पैदा किया, फिर तुझे दुरुस्त किया, फिर तुझे एतिदाल पर बनाया और जिस सूरत में भी चाहा, तुझे तरकीब दे दिया, तुझे मग़रूर हरगिज़ नहीं होना चाहिए था, अस्ल यह कि तुम जज़ाअ (प्रतिकार) ही को झुठलाते हो, जबकि तुम्हारे ऊपर (हमारी तरफ़ से) याद रखने वाले (मुकर्रर) हैं वह जानते हैं उसको जो कुछ तुम कर रहे हो।

सूरः इनफ़ितारः 6–12)

तौहीने रिसालते का क़ज़ीया नया नहीं है, इस किस्म के बहुत से वाक़िआत तारीख़ में मिलते हैं, लेकिन साबिक़ा ज़माने में नामूसे रिसालत पर उंगली उठाने और आज कल की जो तस्वीरें हमारे सामने हैं उन में बड़ा फ़र्क़ है, ज़मान–ए–रिसालत में तौहीन रिसालत के लिए झूटे नबूवत के दावेदार थे, जो दीने इलाही को बदल कर फ़ितना पैदा करना चाहते थे, लेकिन आज इन इहानत आमेज़ वाक़िआत का ज़ाहिर होना दुश्मनाने इस्लाम का इस्लाम की दिन ब दिन तरक्की से ख़ौफ़ महसूस करना और उन के दिलों में हसद और बुग्ज़ की आग का भड़कना है।

तमाम अंबिया और रसूलों की बेसत के बाद अल्लाह तआला ने सब से अखीर में हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को मबऊस किया, ताकि क़यामत तक आने वाले इंसानों तक इंसानियत का पैगाम पहुंचाया जाये, और यह बावर कराया जाय कि आप तमाम नबियों और रसूलों के सरदार हैं, क़यामत के रोज़ जब कि नफ़्सी नफ़्सी का आलम होगा, और हर एक इंसान अल्लाह के नेक बन्दों की शफ़ाअ़त का मोहताज होगा, उस वक़्त आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम अल्लाह तआला की इज़ाजत से तमाम अहले ईमान की शफ़ाअत फरमाएंगे, अल्लाह तआला का इरशाद है: *"कौन ऐसा है जो उसके सामने बगैर उस की इजाज़त के सिफारिश कर सके"।*

(अल–बक़राः 255)

मुसलमानों में बाज़ गिरोह ऐसे हैं, जो रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से महब्बत का बहुत ज़ियादा इज़हार करते हैं, लेकिन वह ज़िक्रुल्लाह ख़शीयते इलाही, तजर्रू और इनाबत से बिल्कुल खाली होते हैं, मुआ़मलात को हल करने में अल्लाह तआ़ला को मुश्किल कुशा तसव्वुर नहीं करते, सुन्नते नबवी को फ़रामोश करके यह दावा करते हैं कि माहे रबीउल अव्वल में ज़िक्रे रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ही उन की मेराज के लिए काफी है, हालांकि अल्लाह तआला ने लिसाने नुबूव्वत से यह कहलवा दिया *"आप कह दीजिए कि अगर तुम अल्लाह से महब्बत रखते हो, तो मेरी पैरवी करो, अल्लाह तुम से महब्बत करने लगेगा, और तुम्हारे गुनाह बख़्श देगा, अल्लाह बड़ा बख़्शने वाला बड़ा मेहरबान है।*

(सूरः आले इमरानः 31)

मौत ज़िन्दगी ख़ुशी व ग़म, फक़ीरी व मालदारी, क़िल्लत व कसरत हर हाल में इत्मीनाने क़ल्ब के साथ अल्लाह पर ईमान लाना,

फ़राइज़ व वाजिबात, सुनन व नवाफ़िल उन तमाम चीज़ों में नबवी तरीक़ा से आरास्ता होना ही मर्दे मोमिन की शान है, उसकी दुन्या व आख़िरत की सआ़दत व कामयाबी का जामिन है, आदमी ख़्वाह मुसलमान हो या गैर मुस्लिम नबवी तालीमात से किसी हाल में बेनियाज़ नहीं हो सकता, अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को मिनजानिबिल्लाह यह हुक्म हुआ था कि वह तमाम लोगों में तबलीग़े दीन का फरीज़ा अंजाम दें: तर्जुमाः *ऐ हामरे पैग़म्बर! जो कुछ आप पर आपके परवरदिगार की तरफ़ से उतरा है यह सब आप लोगों तक पहुंचा दीजिए और अगर आपने यह न किया तो आपने अल्लाह का पैगाम पहुंचाया ही नहीं।*

(सूरः अल माइदाः 67)

तर्जुमाः *ऐ नबी! बेशक हम ने आप को भेजा है बतौरे गवाह और बशारत देने वाले और डराने वाले के और अल्लाह की तरफ़ से उसके हुक्म से बुलाने वाले के, और बतौरे एक रौशन चिराग़।*

(सूरः अल अहज़ाबः 45–46)

सरवरे दो जहां सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की रिफअ़त व बुलन्दी को अरब व अज़म के बहुत से शायरों ने बयान किया है, उन्होंने ख़िदमते दीन समझ कर मदहे रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम या नात नबवी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के बाब में अपनी ज़बान व क़लम की जौलानियाँ दिखाईं, और उम्मत पर आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के एहसानात का तज़्किरा किया, सबसे पहला तबक़ा मुख़ज़रम शायरों का था जो अ़हद जाहिली और अहद इस्लामी दोनों अहद में रहा, उन्होंने जब रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के रोज़ व शब के मामूलात देखे, और इस्लाम की तालीमात पर नज़र डाली तो वह इस्लाम के हल्क़े में दाख़िल हो गये, और रसूले अकरम की इज़्ज़त व नामूस के बचाव में सीना सिपर हो गए, कई ऐसे मौक़े हैं, जिन में उन्होंने कुफ़्फ़ारे कुरैश को ललकारा, और इस्लाम की बेहतरीन तर्जुमानी की, उनमें एक नुमायाँ नाम हज़रत हस्सान बिन साबित रज़ि0 का है।

जब अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम मदीना मुनव्वरा तशरीफ़ ले गए तो क़बीला अंसार के लोगों ने हर चीज़ आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के क़दमों में निछावर कर दी, क्योंकि हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम उनके पास सबसे क़ीमती तोहफा इस्लाम लेकर आये थे। ये मंज़र देख कर हज़रत हस्सान बिन साबित रज़ि0 का जज़्ब–ए–ईमानी जोश में आया, और उन्होंने हुजूर की तारीफ़ में एक शानदार क़सीदा कहाः

तर्जुमाः हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने कुरैश में 13 साल क़ियाम फरमाया, एलाए कलिमतुल्लाह और तबलीगे दीन का फरीज़ा अंजाम देते हुए, काश कि उन को कोई हम मिज़ाज दोस्त मिल जाता, मौसमे हज में आप खुद को हाजियों के सामने पेश कर देते, और आप को

पनाह देने वाला और आप की मेज़बानी करने वाला कोई नहीं था, जब आप हमारे दियार में तशरीफ़ लाये, तो हमारे नख़लिस्तान आप की आमद से लहलहा उठे, और आप मदीना तय्यिबा से राज़ी और खुश हो गए, अब यहां पर आपको किसी ज़ालिम या बागी की अदावत का डर नहीं रहा, हम ने जगं और लड़ाई के वक़्त आप पर अपनी जान व माल और अपनी हमदर्दियों को कुर्बान कर दिया, हम उन तमाम लोगों से जंग करेंगे जो आप से दुश्मनी करेंगे, अगर्चे वह शख़्स हम से ख़ालिस दोस्ती और तअल्लुक रखने वाला ही क्यों न हो, हम जानते हैं कि अल्लाह के अलावा कोई रब नहीं और यह भी जानते हैं कि किताबुल्लाह ही हिदायत का ज़रीआ है।

जब कुरैश को इस बात का इल्म हुआ कि मदीना मुनव्वरा में हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का इस तरह इस्तिक़बाल किया गया है तो उनके दिलों में हसद की आग भड़क उठी, और उनके शायरों ने हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की शान में गुस्ताख़ाना अश्आर कहे, कुफ़्फ़ार की तरफ़ से शेर कहने वाले तीन लोग थे, अब्दुल्लाह बिन अज़्ज़बअरी, अबू सुफयान हारिस बिन अब्दुल मुत्तलिब, और अम्र बिन आस इसी तरह मुसलमानों की तरफ़ से शायरी का जवाब शायरी से देने के लिए और उन की हिजो व मज़म्मत करने के लिए शोराए रसूल में हस्सान बिन साबित, काब बिन मालिक और अब्दुल्लाह बिन रवाहा पेश–पेश थे, लेकिन जवाबी शेर व शायरी में खुदा दाद सलाहियत हज़रत हस्सान बिन साबित रज़ि0 को हासिल थी और उनके अश्आर कुफ़्फार को तलवार व भाले से ज़ियादा चुभते थे, इसलिए हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने उनसे फरमाया था ''उनकी हिजो करो, गोया तुम उन पर तीर चला रहे हो''।

उसके बाद हस्सान बिन साबित रज़ि0 न 34 अश्आर पर मुश्तमिल एक क़सीदा कहा, जिसके कुछ अश्आर यह हैः

तर्जुमाः जब हमारे पास सरवरे कायनात तशरीफ़ लाये, दीने हक ले कर और तारीकी के बाद रौशनी ले कर तो हम ने उनकी नाफरमानी नहीं की और वह हमारे मर्जा (संदर्भ) बन गये, इस सुब्ह जब वह सरज़मीने हरम से तशरीफ़ लाये और हम ने कहा, ऐ अल्लाह के रसूल! आपने सच फरमाया, आप हमारे यहां सुकूनत इख़्तियार फरमा लीजिए।

किसी भी ज़माने में किसी इन्सान के लिए नामुमकिन है कि वह उस बुलन्द मक़ाम व मर्तबा को सही अंदाज़ में बयान कर दे, जिससे अल्लाह तआला ने आप को नवाज़ा था, ख़्वाह उसका मुताला कितना ही वसी हो, हालांकि शोराए इस्लाम ने इस बुलन्दी की चोटी पर पहुंचने की कोशिश

शेष पृष्ठ ....27....पर

रमज़ान का मुबारक महीना और उसकी बरकतें

—गुफरान नदवी

अल्लाह तआला ने फ़रमाया कि हमने इन्सान व जिन्नात को अपनी इबादत के लिए पैदा किया यदि उसने अल्लाह की इबादत नहीं की तो उसने अपनी ज़िन्दगी का मक़सद नहीं पूरा किया, ऐसी सूरत में इन्सान का कर्तव्य है कि अपने पालनहार का अज्ञापालन करे, कलिमा पढ़ने के बाद इन्सान इस्लाम धर्म में दाखिल हो जाता है तब वह मुस्लिम और मोमिन कहलाता है, कलिमा, अल्लाह और बन्दे के बीच इक़रार नामा है जिसके परिणाम स्वरूप बन्दे पर नमाज़, रोज़ा, ज़कात और हज़ अपनी शर्तों के साथ फ़र्ज़ हो जाता है, ख़ुश क़िस्मत हैं वह लोग जिनको यह मुबारक महीना मिला और उन्होंने इसका हक़ अदा किया, साल के बारा महीनों में सबसे ज़ियादा बहुमूल्य और क़ीमती महीना रमज़ानुल मुबारक है, अल्लाह के नबी हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम अपनी उम्मत को रमज़ान से एक महीना पहले शअ़बान के महीने में ख़बरदार करते थे ऐ लोगों तुम पर बड़ी इज़्ज़त वाला और बड़ी बरकत वाला महीना आने वाला है, मशहूर हदीस जिसके रावी हज़रत सलमान फ़ारसी रज़ि0 हैं रिवायत करते हैं कि नबी करीम सल्ल0 ने माहे शअ़बान की आखिरी तारीख़ में एक ख़ुतबा दिया जिसमें आपने विस्तार पूर्वक रमज़ान शरीफ़ से सम्बन्धित ज़रूरी बातें फ़रमाईं जिसका सारांश इस प्रकार है:—

ऐ लोगो! तुम्हारे सरों पर बड़ी बरकत वाला और बड़ी अज़मत वाला महान महीना अपना साया डाल रहा है। इस मुबारक महीने की एक रात (शबे क़द्र) हज़ार महीनों से बेहतर है। इस महीने के रोज़े अल्लाह तआला ने फ़र्ज़ किये हैं और उसकी रातों की नमाज़ को नफ़ल इबादत नियत किया है जिसका बहुत बड़ा सवाब रखा है। जो व्यक्ति इस महीने में अल्लाह की रज़ा और उसका कुर्ब (प्रसन्नता और निकटता) प्राप्त करने के लिए कोई फ़र्ज़ इबादत के अलावा नफ़ल, सुन्नत अदा करेगा तो उसको दूसरे ज़माने के फ़र्ज़ों के बराबर उसका सवाब मिलेगा, और इस महीने में फ़र्ज़ अदा करने का सवाब दूसरे ज़माने के सत्तर फ़र्ज़ों के बराबर मिलेगा, यह सब्र (धैर्य) का महीना है और सब्र का बदला जन्नत है, यह हमदर्दी और ग़म ख़्वारी (सहानुभूति) और संवेदना का महीना है, यही वह महीना है जिसमें मोमिन बन्दों के रिज़्क़ में ज़ियादती की जाती है जिसने इस

महीने में किसी रोज़ेदार को इफ़तार कराया तो उसके लिए गुनाहों की मग़फ़िरत, और दोज़ख़ से आज़ादी का ज़रिया होगा। और उसे रोज़ेदार के बराबर सवाब दिया जायेगा और यह केवल अल्लाह की ओर से फ़ज़्ल होगा, यह नहीं कि रोज़ेदार के सवाब में से कुछ काट कर उस इफ़तार कराने वाले को सवाब दिया जाये, बल्कि रोज़ेदार को अपने रोज़े का सवाब पूरा–पूरा मिलेगा। यह बात ध्यान में रहे कि इफ़तार कराने का सवाब, कमी बेशी पर निर्भर नहीं, एक घूँट पानी, शरबत, लस्सी, एक खजूर भी काफ़ी है, ज़ियादा स्वादिष्ट और पेट भर इफ़तार कराना ज़रूरी नहीं।

रमज़ान के शुरु के दस दिन रहमत के दूसरे दस दिन गुनाहों के मआफ़ी के, तीसरे दस दिन जहन्नम के अज़ाब से आज़ादी के। यह हदीस नबवी फरमाने रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम है, इसकी व्याख्या और स्पष्टीकरण, यह है कि ऐसे इन्सान जो गुनाहों से पाक साफ़ रहते हैं अल्लाह की नाफ़रमानी से अपने को सुरक्षित रखते हैं, उनको रमज़ान के शुरु के दस दिन में ''रहमत'' का परवाना मिल जाता है, यह बहुत ऊँचे दर्जे के लोग हैं जिनका शुमार कुर्आन की ज़बान में सिद्दीकीन व सालिहीन में होता है। इन्सानों का दूसरा तबक़ा उन लोगों का है जो साधारण दर्जे के गुनहगार हैं, उनके साथ मुआमला इस तरह का होता है कि रमज़ान के शुरु दिनों में यह लोग रोज़ों और दूसरे नेक आमाल के ज़रिये अपने गुनाहों की पूर्ति कर देते हैं तो उन्हें मध्य रमज़ान में माफ़ी दे दी जाती है और बख़्शिश हो जाती है, तीसरा तबक़ा (वर्ग) उन लोगों का है जिनके गुनाह उस दूसरे तबक़े से ज़ियादा होते हैं वह जब रमज़ान के शुरु और बीच हिस्से में रोज़े रख कर और दूसरे अच्छे आमाल करके अपने दुष्कर्मों की पूर्ति कर लेते हैं तो रमज़ान के अन्तिम दिनों में जहन्नम से आज़ादी दे दी जाती है, और जो लोग पहले ही से रहमत के हक़दार होते हैं, या बीच रमज़ान में जिनको माफ़ी दे दी जाती है उनका तो कहना ही क्या, उनके साथ तो लुत्फ़ व इनआमात का व्यवहार हर दिन बढ़ता है। या अल्लाह! हम सब पर रहम करम का मुआमला फ़रमा।

पूरे साल में एक बार यह बरकत व रहमत का महीना आता है, इस का दिन भी बरकत वाला है और इसकी रात भी बरकत वाली है इसी लिए नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम जो पूरी इन्सानियत के लिए रहमत हैं, अपनी उम्मत को बार बार याद दिलाते हैं कि

यह मुबारक महीना ग़फ़लत और लापरवाही में न गुज़रे, देखने में यह आया है कि अगर पूरा रमज़ान और उसके दिन व रात अल्लाह व रसूल के हुक्मों के मुताबिक़ गुज़रा तो उसकी बरकतें पूरे साल रहती हैं, प्यारे नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया– रमज़ान के महीने में चार काम ज़ियादा करो, दो काम वह जिन से तुम अपने मालिक को राज़ी कर सकोगे और दो काम वह जिनकी तुम्हें ख़ुद ज़रूरत है, पहले दो काम यह हैं कि अल्लाह की वहदानियत की शहादत दो और उससे अपने गुनाहों की मग़फिरत व मआफ़ी तलब करो यानी कलिम–ए–तौहीद व इस्तिग़फ़ार की इस महीने में कसरत करो, दूसरे वह दो काम जिनकी तुम को ज़रूरत है यह हैं कि अल्लाह से जन्नत का सवाल करो और दोज़ख़ से पनाह मांगो और जो शख़्स किसी रोज़ेदार को इस महीने में पानी पिलायेगा, अल्लाह तआला उसको मेरे हौज़ेकौसर से ऐसा सैराब फ़रमायेंगे कि फिर जन्नत में दाख़िल होने तक उसको प्यास न लगेगी।

रोज़ेदार का सम्मान और अल्लाह का उससे विशेष लगावः–

हज़रत अबु हुरैरा रज़ि0 से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया आदमी के हर अच्छे अमल का सवाब दस गुने से सात सौ गुने तक बढ़ाया जाता है, मगर रोज़ा इस सामान्य क़ानून से अलग है, अल्लाह तआला फरमाता है कि रोज़ा मेरे लिए है मैं जितना चाहूंगा इसका अज्र व सवाब दूंगा, रोज़ा रखने वाला अल्लाह के अज्ञापालन में अपनी भूख प्यास, जिन्सी ख़्वाहिश छोड़ कर अपने रोज़े को पूरा करता है बन्दे का यह अमल ऐसा है कि जिसको अल्लाह के अलावा कोई नहीं जानता, बन्दे की इस अदा पर अल्लाह ख़ुश हो कर फ़रमाता है ''रोज़ा मेरे लिए है मैं जितना चाहूं सवाब दूँ'', इसी प्रकार रोज़ेदार का एक सम्मान यह भी है कि जन्नत के दरवाज़ों में से एक दरवाज़ा जिसका नाम ''रय्यान'' है उस दरवाज़े से क़ियामत के दिन रोज़ेदार ही दाख़िल होंगे, उनके अलावा कोई दूसरा उससे दाखिल न हो सकेगा और जब रोज़ेदार दाख़िल हो जायेंगे तो उसको बन्द कर दिया जायेगा और फिर उससे कोई दाखिल न हो सकेगा।

❖❖❖

अनुरोध

अगर आपको ''सच्चा राही'' की सेवायें पसन्द हों तो आप से अनुरोध है कि ''सच्चा राही'' के नये ग्राहक बनाने का प्रयास करें, अल्लाह आपको अज्र देगा और हम आपके आभारी होंगे।

(सम्पादक)

आपके प्रश्नों के उत्तर

—मुफ़्ती मुहम्मद ज़फर आलम नदवी

प्रश्नः मौजूदा दौर में गैर मुस्लिमों में भी कुर्आन का मुताला करने का रुजहान बढ़ा है, लेकिन अरबी ज़बान से नावाक़िफ होने की वजह से वह नहीं पढ़ पाते हैं, ऐसी सूरत में दावती नुक़्तए नज़र से अगर कुर्आन के अल्फ़ाज़ मुख़ातब के रस्मुल—ख़त में लिख दिये जायें, और शाए किये जाएं, मसलन गुजराती, हिन्दी या अँग्रेज़ी ज़बान में तो क्या यह दुरुस्त है?

उत्तरः कुर्आन अल्लाह तआ़ला की आख़िरी आस्मानी किताब है, जो आखिरी नबी हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम पर हज़रत जिब्रईल अलैहिस्सलाम के वास्ते से उतरी है, उस वक़्त से अब तक पूरी तरह उन्हीं अल्फ़ाज़ व हुरूफ़ में मौजूद और महफ़ूज़ है, जिनमें यह नाज़िल हुई है, और क़ियामत तक हमेशा इसी तरह रहना है, इसलिए कुर्आन का उन्हीं हुरूफ़ व अल्फ़ाज़ जिनको रस्मे उस्मानी कहते हैं शाए करना लाज़िम है, दूसरी किसी भी ज़बान में उनके हुरूफ़ लिखना और शाए करना जाइज़ नहीं है, बल्कि ब इजमाए उम्मत हराम है। (अल इतकान लिस्सुयूतीः 2/329, अन्नफहतो अलकुदसियाः 35)। दावती या किसी भी मक़सद से उसको गैरअ़रबी में शाए करना तहरीफ का दरवाजा खोलना है, शरीअत की निगाह में कुर्आन का कामिल तौर पर महफ़ूज़ रहना किसी और मक़सद के हुसूल से कहीं ज़ियादा अहम है इसलिए बेहतर यह है कि कुर्आन का पैग़ाम गैर मुस्लिमों के दर्मियान उनकी ज़बान में पहुँचाया जाय, या अरबी मतन के साथ इसके मआ़नी मुख़ातब की ज़बान में पेश किये जाएं, उससे दावती मक़सद हासिल हो सकता है।

प्रश्नः मतन कुर्आन के बगैर किसी भी ज़बान मसलन अँग्रेज़ी, हिन्दी या मलयालम वगैरा में तन्हा तर्जुमए कुर्आन शाए किया जा सकता है या नहीं? इधर कई वर्षों से देखा जा रहा है कि लोग सिर्फ तर्जुमा कुर्आन शाए कर रहे हैं, क्या इस किस्म का तर्जुमा खरीदना या हदया करना या आम लोगों में तक़्सीम करना दुरुस्त है?

उत्तरः कुर्आन मजीद वह आसमानी किताब है जिनके हुरूफ़ व मआ़नी दोनों अल्लाह की तरफ़ से नाज़िल किये हुए हैं और दोनों के मजमूआ़ को कुर्आन कहा जाता है, सिर्फ तन्हा तर्जुमा नहीं है, जम्हूरे उम्मत और सलफे सालिहीन का फैसला यही है, इमाम इब्ने तैमिया रह0 ने फैसला को नक़्ल करने के बाद लिखा हैः—

शेष पृष्ठ .....36....पर

—पिछले अंक से आगे.....

घरेलू मसायल

—मौलाना बुरहानुद्दीन सम्भली रह0 —अनुवादकः मौलाना मु0 जुबैर अहमद नदवी

हज़रत ख़दीजा के वाक़िये से दहेज देने के सुन्नत होने पर दलील देना सही नहीं:–

कुछ लोग हज़रत ख़दीजतुल कुबरा रज़ियल्लाहु अन्हा का अपनी साहबज़ादी हज़रत जैनब (रजि०) को उनकी शादी के वक़्त ''हार'' देना भी दहेज के सुन्नत होने के लिए सनद समझते हैं, लेकिन यह सनद और बुन्याद बहुत ज़ियादा कमज़ोर है, क्योंकि पहली बात तो यह कि यह काम उम्मुल मूमिनीन (रज़ि०) का था (आप (सल्ल०) का नहीं था) और वह भी नबुव्वत से पहले वाले ज़माने में, यानी जब कि आप (स०) पर ''वही'' उतरना शुरू न हुई थी, रही यह बात कि हज़रत जैनब की रुख़सती नबुव्वत के ऐलान के बाद हुई और उसी वक़्त हज़रत ख़दीजा ने हार दिया था और उनका निकाह एलाने नबुव्वत से पहले हो गया था, यह सिर्फ एक ख़याल है, जिसके पीछे कोई मज़बूत दलील नहीं, यह ख़याल भी कि ''दस ग्यारह साल की लड़की का अरब के अंदर (नबूव्वत के ज़माने में) सम्भोग के लायक़ होना मुश्किल है'' घोर अज्ञानता पर आधारित है, अगर नबूव्वत के बाद का यह वाक़िया होता, तो भी सिर्फ़ इससे ज़ायज़ होना साबित होता, इस अमल का सुन्नत होना साबित ना होता।

मगर जब यह मालूम और साबित है कि यह वाक़िया नबुव्वत से पहले का है तो जानकार लोग जानते हैं कि जायज़ होने पर भी दलील की गुंजाईश नहीं रह जाती, सुन्नत होना तो दूर की बात है, यह अलग बात है कि बिना किसी स्पष्ट शर्त के और बिना नाम नमूद, आसानी से हासिल करके शादी के अवसर पर भी कुछ देना दूसरी दलीलों से साबित है।

अबुल आस से हज़रत ज़ैनब (रज़ि०) की शादी जिसमें हार दिया गया था का नबुव्वत से पहले होना दूसरी तीसरी सदी हिजरी के मशहूर व विश्वसनीय इतिहासकार अब्दुल मालिक बिन हिशाम ने अपनी विश्व प्रसिद्ध किताब ''सीरत इब्ने हिशाम'' शीर्षक ''ज़ैनब से अबुल आस की शादी की वजह'' के अंतर्गत इस तरह बयान किया है।

''अबुल आस व्यवसाय, अमानत और दौलत में मक्के के कुछ विशिष्ट लोगों में से थे और हज़रत ख़दीजा (रज़ि०) उनकी ख़ाला थीं अतः हज़रत ख़दीजा (रज़ि०) ने ख़ुद ही रसूलुल्लाह (स०) से दरख्वास्त की कि आप (स०) अबुलआस से (ज़ैनब) की शादी कर दें, रसूलुल्लाह (स०) हज़रत ख़तीजा की राय के ख़िलाफ नहीं करते थे, और यह वाक़िया आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम पर ''वही'' नाज़िल होने से पहले का है। जब आपको अल्लाह तआला ने नबूव्वत से नवाज़ा तो हज़रत ख़दीजा (रज़ि०) और आप की तमाम बेटियां ईमान ले आईं मगर अबुल आस शिर्क पर क़ायम रहे (फिर लम्बे ज़माने के बाद वे भी ईमान ले आये)।

इसके अलावा मशहूर हाफिज़–ए–हदीस इब्ने हजर अस्क़लानी ने सहाबा के हालात पर अपनी अति विश्वसनीय किताब ''अल–इसाबह'' में अबुल आस के तज़करे में जो अंदाज़ अपनाया है उससे भी यही ज़ाहिर होता है।

(अल–इसाबह, जिल्द 7, पृष्ठ 248)।

हज़रत ज़ैनब (रज़ि०) की छोटी बहन हज़रत उम्मे कुलसूम (रज़ि०) के निकाह के बारे में बहुत से जीवनी लेखकों ने लिखा है वह भी नबूव्वत से पहले हुआ था (जैसे हाफिज़ इब्ने अब्दुल बर्र (रह०) और ज़रक़ानी ने बयान किया है, देखिये ज़रकानी शरह मवाहिब, पृष्ठ–198, जिल्द 3) और समकालीन विशिष्ट शोधकर्ता जीवनी लेखक हज़रत अल्लामा सय्यद सुलैमान नदवी (रह०) ने अपनी विश्व प्रसिद्ध ''सीरतुन्नबी'' (जिल्द 2, पृष्ठ 340,) में हज़रत ज़ैनब (रज़ि०) की दूसरी बहन हज़रत रुक़य्या (रज़ि०) की शादी का भी –– इब्ने साद के हवाले से –– नबुव्वत से पहले होना साबित किया है, तो फिर बड़ी बहन की शादी नबूव्वत से पहले होना और ज़ियादा स्पष्ट हो जाता है।

इसी तरह साद बिन रबी (रज़ि०), जो उहद में शहीद हो गए थे उनकी दो लड़कियां थीं इस पर उनकी बीवी ने कहा था ''इन का निकाह जभी हो सकता है जब कि इनके पास माल हो'' के वाक़िये से मौजूदा शैली में दहेज देने के बारे में दलील पकड़ना ''दूर की कौड़ी लाने'' जैसा है, क्योंकि साद (रज़ि०) की बीवी का यह कहना की ''बिना माल के निकाह नहीं होता'' इसलिए भी हो सकता है कि लड़की के पास माल होना पैग़ाम आने का कारण होता था। जैसा कि हदीस में आया है यहाँ वही मतलब मालूम होता है, ना कि इस ज़माने का दहेज, जिस का सहाबा के ज़माने में बिलकुल रिवाज ना था।

हज़रत फ़ातिमा (रज़ि०) के दहेज से दलील लेना सही नहीं:–

इसी तरह हज़रत फ़ातिमा (रज़ि०) को उनकी शादी के समय जो घरेलू सामान दिया गया था उसे भी इस ज़माने के दहेज के रिवाज के लिए सनद बनाना सही नहीं। क्योंकि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का चार बेटियों में से सिर्फ़ एक बेटी, हज़रत फ़ातिमा (रज़ि०) को देना इस गरज़ से था कि हज़रत अली (रज़ि०) का स्थाई रूप से अलग रहने का इंतिज़ाम नहीं था, तो ज़ाहिर है कि घरेलू सामान की मौजूदगी का भी कोई सवाल ना था, इसके अलावा हज़रत अली कर्रमल्लाहु वजहु के अभिभावक भी आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ही थे, अगर इस अवसर पर आप सामान न देते तो भी शायद इसकी व्यवस्था आपको ही करनी पड़ती, इन सबसे बढ़ कर दहेज के मौजूदा तरीक़े के सुन्नत न होने की एक दलील यह है कि वह घरेलू सामान जो हज़रत फ़ातिमा को आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने रुख़सती के समय (या उसके बाद) दिया था, जिसे जन मानस दहेज देना कहते है, वह ख़ुद हज़रत अली (रज़ि०) की तरफ़ से उपलब्ध कराये गये पैसों से ख़रीद कर दिया था, जिसको जीवनी लेखकों ने स्पष्ट किया है, जैसे ''ज़रकानी''

शरह मवाहिब में है कि आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने हज़रत अली (रजि०) को कवच बेचने का हुक्म दिया जो उन्हों ने हज़रत फ़ातिमा (रज़ि०) को दी थी, उसके बाद का वाक़िया ''ज़रक़ानी'' में इस तरह बयान किया गया है कि हज़रत अली (रज़ि०) ने फरमायाः— तो मैंने वह कवच हज़रत उस्मान ग़नी (रज़ि०) के हाथ चार सौ अस्सी दिरहम में बेच दी, मगर इन सारे पैसों के साथ कवच भी हज़रत उस्मान (रज़ि०) ने हज़रत अली (रज़ि०) को दे दी जिस पर रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने हज़रत उस्मान (रज़ि०) को बहुत दुआएं दीं। हज़रत अली (रज़ि०) फ़रमाते हैं कि मैं वह सब पैसे ले कर रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की सेवा में हाज़िर हुआ तो आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने हज़रत बिलाल (रज़ि०) से फ़रमाया कि इन पैसों के एक हिस्से से खुशबू ख़रीद लाओ (इन्हीं से या किसी और से फ़रमाया) और एक हिस्से से कपड़े वगैरह, और फ़रमाया कि इससे (फ़ातिमा के लिए) सामान का इंतेजाम कर दो अतः एक (विशेष प्रकार का अरबी) बिस्तर और चमड़े का तकिया वगैरह तैयार करवाया गया।

(ज़रकानी शरह मवाहिब जिल्द 2, पृष्ठः 3—4)

इसके अलावा हिंदुस्तान के मशहूर व विश्वसनीय और व्यापक दृष्टि व महान शिक्षक विद्वान मौलाना मुफ्ती इनायत अहमद काकोरवी (रह०) अपनी मकबूले आम सीरत की किताब ''तवारीख हबीबे इलाह'' के चौथे खण्ड में लिखते है :—

''हजरत अली (रजि०) सब दिरहम कवच की कीमत सेवा में ले आए, आप (स०) ने एक मुट्ठी हज़रत बिलाल (रजि०) को दी कि इन दिरहमों से खुश्बू फ़ातिमा (रजि०) के लिए ले आओ, और बाकी आप (स०) ने हजरत उम्मे सलमा (रजि०) को दे कर कहा कि इससे दहेज गृहस्ती का सामान बीबी फ़ातिमा (रजि०) का कर दो एक पलंग। .....

(तवारीख हबीबे इलाह पृष्ठ :44)

❖❖❖

शाने रिसालत में.....

की, लेकिन वह अपने अश्आर में आप की शायाने शान मदह सराई से क़ासिर रहे।

लेकिन यह भी एक तारीखी हक़ीक़त है कि हर ज़माने में कुछ ऐसे अफ़राद होते हैं जो आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के मक़ाम व मर्तबा में कमी निकालने की नाकाम कोशिश करते हैं, ऐसे लोगों पर अल्लाह, रसूल, मलाइका और तमाम मख़लूक़ात की लानत हो, और क़रीब है कि ऐसे लोगों पर अल्लाह का अज़ाब नाज़िल हो, जैसा कि तारीख़ शाहिद रही है। हज़रत हस्सान बिन साबित रज़ि0 का शेर हैः

तर्जुमाः क्या जो अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की शान अक़्दस में गुस्ताखी करता है और जो उनकी मदह सराई और उनकी मदद करता है, बराबर हो सकते हैं?

❖❖❖

अब कोई 'अबला' मरे नहीं, बल्कि लड़े!

(विश्व महिला दिसवस 8 मार्च, 2021 ई0 के मौक़े पर)

–प्रोफेसर डॉ0 हैदर अली खाँ

पिछले दिनों साबरमती नदी के किनारे की बेटी आयशा ने दहेज की मांग से आजिज़ आ कर आत्म हत्या कर ली। दुःखद अवश्य है लेकिन अपने को 'अबला' से ऊपर उठ कर उसे लड़ना चाहिए था और लड़ते–लड़ते अगर मर जाती तो हम महिला सशक्तिकरण को मजबूत होते देखते, उसे बधाई देते, उसे सम्मानित भी करते।

दहेज की भी मांग करने वाले पति को वह अच्छा सबक भी सिखा सकती थी। देश के कई कानून पीड़ित महिलाओं के पक्ष में हैं। कई संस्थाएं भी मदद करने के लिए तैयार रहती हैं। क्या ही अच्छा होता अगर वह हर उस जगह पर दस्तक देती जो अलार्म सुनने को सदैव तैयार रहते हैं।

भारतीय दण्ड संहिता (आई0पी0सी0) की धारा–498 दहेज लोभियों को अच्छा सबक सिखाने के लिए सक्षम है। इसी के साथ महिलाओं की सुरक्षा हेतु हिंसा अधिनियम *2005 (Protection of Women from Domestic Violence)* भी उत्पीड़न से सुरक्षा प्रदान करता है। महिला को आर्थिक शारीरिक मानसिक और भावनात्मक उत्पीड़न करने वालों से सुरक्षा प्रदान करता है तथा उन्हें दण्डित भी करता है। इसके अतिरिक्त भी कई प्रावधान मौजूद हैं जिनका सहारा लिया जा सकता था। मुहतरमा आयशा धर्म में स्वीकृत तलाक या ख़ुला भी ले सकती थीं। वर–वधु दोनों पक्ष मिल कर सुलह सफाई की कोशिश भी कर सकते थे। बहरहाल जो नहीं होना चाहिए था वह हो गया। अब किसी और अबला को मरना नहीं वरन् लड़ना चाहिए।

उल्लेखनीय है कि गुजरात पुलिस ने स्वयं संज्ञान ले कर आयशा के पति आरिफ खान के विरुद्ध आत्महत्या हेतु उकसाने के लिए एफ0आई0आर0 दर्ज कर लिया है और उसे जेल भेज दिया है, उसे अगर कड़ी सजा मिलती है तो एक अच्छा संदेश दहेज लोभियों में जायेगा।

❖❖❖

अदब

अदब ही से इन्सान, इन्सान है
अदब जो न सीखे, वह हैवान है
जहाँ में हो प्यारा न क्योंकर अदब
कि है आदमियत का ज़ेवर अदब
न हो जिसको अच्छे बुरे की तमीज़
न वह घर में प्यारा, न बाहर अज़ीज़
बिठाते नहीं बे अदब को क़रीब
यह सच बात है, बे अदब, बे नसीब

कुछ रोज़ों के मुतअल्लिक

जिन चीज़ों से रोज़ा नहीं टूटता और जिन से टूट जाता है, और क़ज़ा या कफ्फ़ारा लाज़िम आता है उनका बयान

—हिन्दी लिपिः फ़ौज़िया सिद्दीक़ा

अगर रोज़ेदार भूल कर कुछ खा ले या पी ले या भूले से ख़ाविन्द से हम बिस्तर हो जाये, तो उस का रोज़ा नहीं गया अगर भूल कर पेट भर भी खा ले तब भी रोज़ा नहीं टूटता, अगर भूल कर कई दफ़ा खा पी लिया तब भी रोज़ा नहीं गया।

एक शख़्स को भूल कर कुछ खाते पीते देखा तो अगर वह इस क़द्र ताक़तवर है कि रोज़े से ज़ियादा तक़लीफ नहीं होती तो रोज़ा याद दिला देना वाजिब है और अगर कोई कमज़ोर हो कि रोज़े से तकलीफ़ होती है तो उस को याद न दिलाये खाने दे।

दिन को सो गई हो और ऐसा ख्वाब देखा जिससे नहाने की ज़रूरत हो गई तो रोज़ा नहीं टूटा। दिन को सुर्मा लगाना तेल लगाना खुशबू सूंघना दुरुस्त है, इससे रोज़े में कुछ नुक़सान नहीं आता चाहे जिस वक़्त हो। बल्कि अगर सुर्मा लगाने के बाद थूक में या रेंढ में सुर्मे का रंग दिखाई दे तो भी रोज़ा नहीं गया न मकरूह हुआ।

मर्द और औरत का साथ लेटना हाथ लगाना प्यार करना यह सब दुरुस्त है, लेकिन अगर जवानी का इतना जोश हो कि इन बातों से सोहबत करने का डर हो तो ऐसा न करना चाहिए मकरूह है।

हलक़ के अन्दर मक्खी चली गई या आप ही आप धुवां चला गया या गर्द व गुबार चला गया तो रोज़ा नहीं गया अलबत्ता अगर क़सदन ऐसा किया तो रोज़ा जाता रहा।

लोबान वगैरह कोई धूनी सुलगाई फिर उस को अपने पास रख कर सूंघा किया तो रोज़ा जाता रहा इसी तरह हुक्का पीने से भी रोज़ा जाता रहता है। अलबत्ता उस धुवें के सिवा इत्र केवड़ा गुलाब फूल वगैरा और खुशबू का सूंघना जिसमें धुवां न हो दुरुस्त है।

दांतों में गोश्त का रेशा फंसा हो या डली का टुकड़ा वगैरा कोई और चीज़ थी उसको खिलाल से निकाल कर खा लिया लेकिन मुंह से बाहर नहीं निकाला आप ही आप हलक़ में चली गई तो देखो अगर चने से कम है तब तो रोज़ा नहीं गया और अगर चने के बराबर या उससे ज़ियादा है तो रोज़ा जाता रहा। अलबत्ता अगर मुंह से बाहर निकाल लिया था फिर उसके बाद निगल

लिया तो हर हाल में रोज़ा टूट गया चाहे वह चीज़ चने के बराबर हो या उससे भी कम हो दोनों का एक ही हुक्म है।

थूक निगलने से रोज़ा नहीं जाता चाहे जितना हो अगर पान खा कर ख़ूब कुल्ली ग़रग़रा कर के मुंह साफ़ कर लिया लेकिन थूक की सुर्खी नहीं गई तो उस का कुछ हरज नहीं रोज़ा हो गया।

रात को नहाने की ज़रूरत हुई मगर गुस्ल नहीं किया दिन को नहाया तब भी रोज़ा हो गया बल्कि अगर दिन भर न नहाये तब भी रोज़ा नहीं जाता। अलबत्ता उस का गुनाह अलग होगा।

नाक को इतने ज़ोर से सुड़क लिया कि हलक़ में चली गई तो रोज़ा नहीं टूटा इसी तरह मुंह की राल सुड़क कर के निगल जाने से रोज़ा नहीं जाता।

मुँह में पान दबा कर सो गया और सुब्ह हो जाने के बाद आँख खुली तो रोज़ा नहीं होगा, क़ज़ा रखे और कफ़्फ़ारा वाजिब नहीं।

कुल्ली करते वक़्त हलक़ में पानी चला गया और रोज़ा याद था तो रोज़ा जाता रहा क़ज़ा वाजिब है कफ़्फ़ारा वाजिब नहीं।

आप ही आप क़ै आई फिर अपने आप ह़लक़ में लौट गई तब भी रोज़ा नहीं टूटा अलबत्ता अगर कसदन लौटा ले तो रोजा टूट जाता है।

किसी ने कंकरी या लोहे का टुकड़ा वग़ैरा कोई ऐसी चीज़ खा ली जिस को नहीं खाया करते और न उस को कोई बतौर दवा के खाता है तो उस का रोज़ा जाता रहा लेकिन उस पर कफ़्फ़ारा वाजिब नहीं और अगर ऐसी चीज़ खाई या पी जिसको लोग खाया करते हैं या कोई ऐसी चीज़ है कि यूं तो नहीं खाते लेकिन बतौर दवा या ज़रूरत के वक़्त खाते हैं तो भी रोज़ा जाता रहा और कज़ा व कफ़्फ़ारा दोनों वाजिब है।

अगर मर्द से हमबिस्तर हुई तब भी रोज़ा जाता रहा उसकी क़ज़ा भी रखे कफ़्फ़ारा भी दे।

रोज़े के टूटने से कफ़्फ़ारा जब ही लाज़िम आता है जब कि रमज़ान शरीफ़ में रोज़ा तोड़ डाले और रमज़ान शरीफ़ के सिवा और किसी रोज़े के तोड़ने से कफ़्फ़ारा वाजिब नहीं होता चाहे जिस तरह तोड़े अगरचि वह रोज़ा रमज़ान की क़ज़ा ही क्यों न हो अलबत्ता अगर उस रोज़े की नीयत रात से न की हो या रोज़ा तोड़ने के बाद उसी दिन हैज़ आ गया हो तो उसके तोड़ने से कफ़्फ़ारा वाजिब नहीं।

किसी ने रोज़े में नास लिया था कान में तेल डाला या जुल्लाब में अमल लिया और पीने की दवा नहीं पी तब भी रोज़ा जाता रहा लेकिन सिर्फ क़ज़ा वाजिब है कफ़्फ़ारा वाजिब नहीं, अगर कान में पानी डाला तो रोज़ा नहीं गया।

रोज़े में पेशाब की जगह कोई दवा रखना या तेल वग़ैरा कोई चीज़ डालना दुरुस्त नहीं अगर किसी ने दवा रख ली तो रोज़ा जाता रहा क़ज़ा वाजिब है, कफ़्फ़ारा वाजिब नहीं।

मुँह से खून निकलता है इस को थूक के साथ निगल लिया तो रोज़ा टूट गया। अलबत्ता अगर थूक से कम हो और खून का मज़ा हलक़ में मालूम न हो तो रोज़ा नहीं टूटा।

अगर ज़बान से कोई चीज़ चख कर थूक दी तो रोज़ा नहीं टूटा, लेकिन बे ज़रूरत ऐसा करना मकरूह है, हाँ अगर किसी का शौहर बड़ा बद मिज़ाज हो और यह डर हो कि अगर सालन में नमक पानी दुरुस्त न हुआ तो नाक में दम कर देगा तो उस को नमक चख लेना दुरुस्त है, और रोज़ा मकरूह ना होगा।

अपने मुंह में चबा कर छोटे बच्चे को कोई चीज़ खिलाना मकरूह है अलबत्ता अगर उसकी ज़रूरत पड़े और मज़बूरी में ऐसा करे तो मकरूह नहीं।

कोयला चबा कर दांत मांझना और मंजन से दांत मांझना मकरूह है, और अगर उसमें से कुछ हलक़ में उतर जायेगा तो रोज़ा जाता रहेगा और मिस्वाक से दांत साफ़ करना दुरुस्त है चाहे सूखी हो या ताज़ी उसी वक़्त की तोड़ी हुई अगर नीम की मिस्वाक है और उसका कड़वापन मुंह में मालूम होता है तब भी मकरूह नहीं।

कोई औरत ग़ाफ़िल सो रही थी या बेहोश पड़ी थी उससे किसी ने सोहबत की तो रोज़ा जाता रहा, फ़क़त क़ज़ा वाजिब है कफ़्फ़ारा वाजिब नहीं और मर्द पर कफ़्फ़ारा भी वाजिब है।

किसी ने भूले से कुछ खा लिया और समझा कि मेरा रोज़ा टूट गया इस वजह से फिर क़सदन कुछ खा लिया तो अब रोज़ा जाता रहा फ़क़त क़ज़ा वाजिब है कफ़्फ़ारा वाजिब नहीं।

अगर किसी को क़ै हुई और वह समझे कि मेरा रोज़ा टूट गया इस गुमान पर फिर क़सदन खा लिया और रोज़ा तोड़ दिया तो भी क़ज़ा वाजिब है कफ़्फ़ारा वाजिब नहीं।

अगर सुर्मा लगाया या फ़सद ली या तेल डाला फिर समझे कि मेरा रोज़ा टूट गया और फिर क़सदन खा लिया तो क़ज़ा और कफ़्फ़ारा दोनों वाजिब है।

रमज़ान के महीने में अगर किसी का रोज़ा इत्तिफ़ाक़न टूट गया तो रोज़ा टूटने के बाद भी दिन में कुछ खाना पीना दुरुस्त नहीं सारे दिन रोज़ेदारों की तरह रहना वाजिब है।

किसी ने रमज़ान में रोज़े की नीयत ही नहीं की इसलिए खाता पीता रहे तो इस पर भी कफ़्फ़ारा वाजिब नहीं क़ज़ा वाजिब है कफ़्फ़ारा जब वाजिब होता कि नीयत कर के तोड़ दे।

(बहिश्ती ज़ेवर से ग्रहीत)

❖❖❖

दूसरों की दया पर निर्भर न रहो

—इं0 जावेद इक़बाल

हज़रत अबू ज़र रज़ि0 ने बताया कि एक बार हज़रत मुहम्मद सल्ल0 ने मुझे बुलाकर कहा कि ''तू लोगों से कुछ न मांगयो''। मैंने कहा (ठीक है) मैं किसी से कुछ न मांगूगा। इस पर नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने कहा कि यदि तेरा कोड़ा ज़मीन पर गिर जाये तो वह भी किसी से न मांग बल्कि सवारी पर से उतर कर स्वयं उठा ले''।

(मिश्कात—1, पृष्ठ 164)

हज़रत जुबैर बिन अब्बास रज़ि0 ने बताया कि एक बार मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने कहा कि तुम में से किसी ज़रूरतमन्द आदमी का यह तरीक़ा कि वह रस्सी लेकर जंगल जाये और लकड़ियों का एक गट्ठर अपनी पीठ पर लाद कर लाये और बेचे (इस तरह अपनी ज़रूरत पूरी करे) तो इस तरह वह ईश्वर की कृपा से स्वयं को भीख मांगने के अपमान से बचा लेगा। अतः यह इससे अच्छा है कि वह लोगों के सामने हाथ फैलाये। तब वे चाहे तो देंगे और चाहे तो न देंगे।

अबु दाऊद व तिर्मिज़ी (हदीस की पुस्तकों) में एक महत्वपूर्ण घटना का उल्लेख है—

एक व्यक्ति ने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के पास आ कर अपनी व्यक्तिगत ज़रूरत के लिए कुछ सहायता मांगी। आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने न तो खुद कुछ दिया और न ही किसी से दिलवाया। बल्कि उसे स्वयं अपनी मदद आप करना सिखाया। उससे पूछा तुम्हारे पास कुछ है? उसने कहा मेरे पास केवल एक टाट है, आधा उसे बिछाता हूं और आधा ओढ़ लेता हूँ तथा एक प्याला है जिससे मैं पानी पीता हूँ।

रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने कहा जाओ उस टाट और प्याले को ले आओ। जब वह व्यक्ति दोनों चीज़े लाया तो आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने स्वयं अपने हाथ में टाट और प्याला ले कर नीलामी की बोली लगवाई कहा— कौन इन चीज़ों को ख़रीदता है? एक सज्जन ने कहा मैं एक दिरहम में लेता हूँ। रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फिर आवाज़ लगाई एक दिरहम से बढ़ कर कौन लेगा? दूसरे सज्जन ने कहा मैं दो दिरहम में लेता हूँ। आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने दो दिरहम ले के टाट और प्याला खरीदार को दे दिया और मांगने वाले व्यक्ति को दोनों दिरहम दे कर कहा कि एक दिरहम से खाने का सामान ले कर घर वालों को दे दो और दूसरे दिरहम से एक कुल्हाड़ी ले

कर मेरे पास आ।

जब वह व्यक्ति कुल्हाड़ी ले कर आया तो रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने स्वयं अपने हाथों से कुल्हाड़ी में लकड़ी का बेंट ठोंका और उस व्यक्ति को दे कर कहा कि जाओ और जंगल से लकड़ी काट–काट कर लाओ और बेचो। मैं पन्द्रह दिन तक तुम्हें न देखूं।

पन्द्रह दिन बाद वह व्यक्ति आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के पास आया और बताया कि इन पन्द्रह दिनों में दस दिरहम कमाये, कुछ दिरहम से कपड़े खरीदे और कुछ से खाने की चीज़ें। यह सुन कर आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने कहा देखो यह तरीक़ा तुम्हारे लिए अच्छा है इस बात से कि (भीख मांगने के कारण) तुम्हारे चेहरे पर क़ियामत के दिन भीख का धब्बा हो।

इन हदीसों से स्पष्ट हो रहा है कि हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने भीख मांगने और दूसरों के सामने हाथ फैलाने को एक अपमान जनक कार्य बताया है और किसी भी छोटे से छोटे, मामूली काम को भी भीख मांगने से अच्छा बताया है।

इससे भी बढ़ कर यह कि हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने अपना काम स्वयं करने की प्रेरणा दी है और अकारण ही अपने छोटे मोटे कामों के लिए दूसरों पर निर्भर रहने की आदत को छोड़ने का पाठ पढ़ाया है।

आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की नज़र में लोगों को आर्थिक रूप से आत्म निर्भर बनाने का जो महत्व था, वह इन सन्दर्भित हदीसों से स्पष्ट हो रहा है। आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने भीख मांगने और दूसरों पर निर्भर रहने को एक अपमान जनक कार्य बताया है।

निष्कर्ष यह कि इस्लाम नहीं चाहता कि समाज का कोई एक व्यक्ति भी अपनी क्षमताओं को निष्क्रिय करके व्यर्थ बरबाद करे और दूसरों पर निर्भर हो कर अपमान भरा जीवन गुज़ारे।

❖❖❖

बुन्यादी और ज़रूरी बात

हिफ़ाज़ते इस्लाम के नारे तो बहुत बलन्द किये जाते हैं मगर अमली पहलुओं से हम ख़ुद दूर रहते हैं, इस्लाम कोई स्टेचू नहीं जिसकी हिफ़ाज़त के लिए लाओलशकर की ज़रूरत हो। आप अपने अन्दर इस्लाम समो लीजिए, आप भी सुरक्षित हो जाओगे और इस्लाम भी सुरक्षित हो जायेगा।

(शैख़ुल इस्लाम मौलाना हुसैन अहमद मदनी रह0)

क़िस्सा इब्राहीम अदहम का

—उबैदुल्लाह मतलूब

इब्राहीम अदहम बादशाह थे मगर उन पर फक़ीरी का ग़लबा था, एक रात उन्होंने बादशाही छोड़ दी और गायब हो गये ऐसा ग़ायब हुए कि फिर कोई उनको पहचान न सका, मगर हलाल रोज़ी खाने के लिए मेहनत मज़दूरी करते थे, उनका एक राज़दार दोस्त था जो उनकी मदद करता था, वह उनको कहीं मज़दूरी मेहनत का काम ढूँढ कर उस पर लगा देता था, इब्राहीम अदहम मेहनत का काम करते थे लेकिन ज़रा भी उनको यह मालूम होता कि यह बुज़ुर्ग हैं तो वहां से ग़ायब हो जाते थे, उनके दोस्त ने एक मालदार औरत के बाग़ की रखवाली पर उनको रखवा दिया, बाग़ सेब और अंगूर का था, इब्राहीम अदहम बड़ी ईमानदारी से बाग़ की रखवाली का काम करने लगे बाग़ के सेब और अंगूर दोनों बहुत मीठे थे कुछ पेड़ खट्टे सेब और अंगूर के भी थे, खट्टे सेब और अंगूर का रंग बहुत खूबसूरत था इब्राहीम अदहम अपनी तनख़्वाह से खाते पीते थे, कभी बाग़ का सेब या अंगूर नहीं खाया, मालदार औरत का मैनेजर सेबों और अंगूरों का हिसाब रखता, कुछ गरीब लोग इब्राहीम अदहम के पास आते और कहते हम भूखे हैं हमको कुछ फल खिला दो वह उनको कुछ फल खिला देते मगर फलों की क़ीमत अपनी तनख़्वाह से कटवा देते, मैनेजर समझता बहुत ईमानदार रखवाला है जो फल खाता है अपनी तनख़्वाह से कटवा देता है।

मालदार औरत ने अपनी कुछ सहेलियों को फल खाने की अपने बाग़ में दावत दी, और कहा हमारे बाग़ के सेब और अंगूर बहुत मीठे होते हैं, औरतें बाग़ में जमा हो गयीं, इब्राहीम अदहम से कहा, अच्छे अच्छे सेब और अंगूर लाओ, इब्राहीम ने कभी चखा तो था नहीं, रंगीन सेब और रंगीन अंगूर ला कर के रख दिया जो खट्टे थे, औरतों ने अंगूर और सेब देख कर खाना शुरु किया, सेब और अंगूर खट्टे देख कर मालदार औरत बहुत नाराज़ हुई और इब्राहीम से पूछा ये खट्टे फल क्यों लाये, इब्राहीम अदहम ने कहा हमने कभी कोई फल चखा नहीं था, हमको जो फल खूबसूरत लगे वह ले आये, मैनेजर नाराज़ हो कर बोला झूठ कहते हो, हर महीने अपनी तनख़्वाह से कुछ पैसे कटवाते थे तुम सेब और अंगूर खाते थे, मालदार औरत ने नाराज़ हो कर इब्राहीम अदहम को निकाल दिया, वह चुपके से ग़ायब हो गये, उनके दोस्त को मालूम हुआ तो वह मालदार औरत के पास आये और कहा तुमने बड़ा ग़लत किया, वह जो तनख़्वाह से पैसे कटवाते थे वह खुद नहीं खाते थे गरीबों को खिलाते थे, वह इब्राहीम अदहम थे मालदार औरत को भी बहुत अफसोस हुआ मगर अब क्या हो सकता था वह तो ग़ायब हो चुके थे।

❖❖❖

क़िस्सा छूत–छात का

–सम्पादक

बात पुराने दौर की है जब रुदौली मिडिल स्कूल फैज़ाबाद के हेड मास्टर हबीब हुसैन साहब थे मिडिल स्कूल में तीन कक्षाएं होती थीं, पहले चौथी, पाँचवीं, छटी कक्षा को मिडिल कहते थे फिर चौथी प्राइमरी में चली गई फिर पांचवी छटी सातवीं कक्षा को मिडिल कहा जाने लगा फिर पांचवीं कक्षा भी प्राइमरी में चली गई अब छठी सातवीं आठवीं कक्षा को मिडिल कहते हैं।

मास्टर हबीब हुसैन बड़े योग्य मास्टर थे वह शिक्षण प्रशिक्षण में निपुण थे अपने स्वभाव से छात्रों का मन देखने में सफल थे वह सफाई सुथराई को बहुत प्रिय रखते थे वह अपने छात्रों को भी सफाई तथा स्वच्छता पर प्रेरित करते थे वह छूत–छात के घोर विरोधी थे परन्तु समाज में उस समय आम चलन था वह मिडिल की अंतिम कक्षा में उर्दू तथा हिसाब पढ़ाते थे।

एक भंगी का लड़का चुन्नू प्राइमरी पास करके रुदौली मिडिल स्कूल में पांचवी क्लास में प्रवेश लिया पर उसकी सीट अलग रखी गई उसको कोई छूता नहीं था, भंगी उस वक़्त उसको कहते थे जो घर–घर खुड्डी का पाखाना झव्वा में भर कर फेंकता था तब घर–घर खुड्डी के पाखाने थे अगर भंगी न फेंकता तो क्या होता।

चुन्नू ने पांचवी छठी पास की मगर उसको कोई छूता नहीं था यहां तक कि मास्टर लोग उसकी कापी तक चेक नहीं करते थे जब वह सातवीं क्लास में था उसकी सीट अलग देख कर मास्टर हबीब हुसैन को दुख हुआ उन्होंने छात्रों से कहा छूत–छात बुरी बात है क्या तुम चुन्नू को अपने साथ बैठा सकते हो?

छात्रों ने कहा क्यों नहीं और साथ में बैठा लिया मास्टर हबीब हुसैन उसकी कॉपी चेक करते थे ये खबर चुन्नू के पिता जुगनू को पहुंची, जुगनू उस समय रंगून में नौकरी करते थे वह बहुत खुश हुए और आने लगे तो एक जापानी छतरी मास्टर साहब के लिए लाये।

मास्टर साहब बड़े नियमित गुरू थे उनका एक नियम बड़ा प्रसिद्ध था वह किसी छात्र से या उसके सम्बन्धी से छात्र काल में उपहार स्वीकार नहीं करते थे अपितु उपहार देने वाले छात्र को स्कूल से निकाल देते, जुगनू जब छतरी लेकर पहुंचा तो दूसरे छात्रों ने समझाया कि उपहार ना प्रस्तुत करना नहीं तो चुन्नू का नाम कट जायेगा। परन्तु जुगनू ना माना मास्टर साहब को छतरी पेश कर दी मास्टर साहब ने छतरी बाहर फेंक दी और चुन्नू का नाम रजिस्टर से काट दिया।

जुगनू ने बहुत मनाया दूसरे छात्रों ने भी सिफारिश की मास्टर साहब ने कहा चुन्नू का नाम अब नहीं लिखा जा सकता अलबत्ता इतनी छूट मिलेगी कि वह क्लास में बैठे उनको व्यतिगत परीक्षा दिला दी जायेगी, परीक्षा हुई चुन्नू प्रथम श्रेणी में पास हुआ परन्तु नियमित नहीं व्यक्तिगत है।

❖ ❖❖

आपके प्रश्नों .....

इस्लामिक फ़िक़्ह अकेडमी इण्डिया ने इस विषय पर एक से तीन मार्च 2015 ई0 सेमिनार मुनअ़क़िद किया और तमाम शरीके अर्बाब फ़िक़्ह व फतावा के इत्तिफ़ाक़ से जो तजावीज़ पास हुई, उनमें तजवीज़ न0 2 की इबारत यह है ''मतन कुर्आन के बगैर किसी भी ज़बान में तन्हा कुर्आन की इशाअत नाजाइज़ है, लिहाज़ा उसे ख़रीदना, तक़्सीम करना हदया करना दुरुस्त नहीं है''।

प्रश्नः मौजूदा दौर में नाबीना और आँख से माजूर लोगों के लिए बरेल कोड में तालीम का रिवाज हो गया है, इसके लिए स्कूल और कालेज भी खुल गये हैं, इसी कोड में नाबीना हज़रात कुर्आन मजीद की तिलावत करने लगे हैं, क्या उनके लिए बरेल कोड में कुर्आन मजीद की इशाअ़त जाइज़ है? क्या यह रस्म उस्मानी के ख़िलाफ तो नहीं है?

उत्तरः बरेल कोड एक रम्ज़ है, रस्म नहीं है, इसलिए बरेल कोड की मदद से कुर्आन मजीद की तिलावत दुरुस्त है, और उसमें कुर्आन मुन्तक़िल करना भी जाइज़ है, इस मसअला पर सेमीनार में जो तजावीज़ पास हुई थीं उनमें एक तजवीज़ यह है ''चूंकि बरेल कोड अलामती ज़बान है, रस्मुलख़त नहीं, इसलिए नाबीना अफ़राद की हाजत व सहूलत के पेश नज़र बरेल कोड में कुर्आने हकीम की इशाअत जाइज़ है, चूंकि यह कुर्आने करीम का रम्ज़ है, इसलिए उसका पूरा एहतिमाम मलहूज़ रखा जाए, अलबत्ता यह बात ज़रूरी है कि नाबीना हज़रात कुर्आने करीम के सही तलफ़्फ़ुज़ से वाक़िफ़ शख़्स की मदद से कुर्आन पाक की तालीम हासिल करें। (इस्लामिक फ़िक़्ह ऐकेडमी इण्डिया)

प्रश्नः मकातिब में बच्चों को पार–ए–अम खिलाफ़ तरतीब कुर्आन पढ़ाया जाता है, क्या यह तरीक़ा दुरुस्त है?

उत्तरः बच्चों की तालीमी सहूलत के मक़सद से पार–ए–अम खिलाफे तरतीब पढ़ाया जाता है, बच्चों को पढ़ाने में एक वक़्त में पूरे पारे की तिलावत भी नहीं होती है, इसलिए इस तरीक़ा तालीम कुर्आन को ग़लत नहीं कहा जा सकता है, फुक़्हा ने उस के जवाज़ की सराहत की है।

(तहतावीअला अद्दुर्रेल मुख़तार)

❖❖❖

औलाद की परवरिश का तरीक़ा

—हिन्दी लिपिः राशिदा नूरी

जानना चाहिए कि यह काम बहुत ही ख़्याल करने के काबिल है क्योंकि बचपन में जो आ़दत भली या बुरी पड़ जाती है वह उम्र भर नहीं जाती इसलिए बचपन से जवान होने तक इन बातों का तरतीब वार ज़िक्र किया जाता है।

1. नेक और दीनदार औरत का दूध पिलायें, दूध का बड़ा असर होता है।

2. औरतों की आदत होती है कि बच्चों को कहीं सिपाही से डराती हैं कहीं और डरावनी चीज़ों से तो ये बहुत बुरी बात है, इससे बच्चे का दिल कमज़ोर हो जाता है।

3. उसके दूध पिलाने और खाना खिलाने का वक़्त मुक़र्रर रखो कि वह तन्दरुस्त रहे।

4. उसको साफ़ सुथरा रखो कि उससे तन्दरुस्ती रहती है।

5. उसका बनाव श्रृंगार मत करो।

6. अगर लड़का हो तो उसके सर पर बाल मत बढ़ाओ।

7. अगर लड़की है तो जब कि परदे में बैठने लायक न हो जाये, ज़ेवर की आ़दत न डालो, बचपन से ही ज़ियादा ज़ेवर का शौक़ अच्छा नहीं।

8. बच्चों के हाथ से ग़रीबों को खाना और पैसा ऐसी चीज़े दिलवाया करें इसी तरह खाने पीने की चीज़ उनके बहन भाई को तक़सीम कराया करें ताकि उनको सख़ावत की आ़दत हो, मगर ये याद रखें कि आप अपनी चीज़ें उनके हाथ से दिलवाया करें खुद जो चीज़ें उनकी हों उसका दिलवाना किसी को दुरुस्त नहीं।

9. ज़ियादा खाने वालों की बुराई उसके सामने किया करो मगर किसी का नाम ले कर नहीं, मगर इस तरह कि जो कोई बहुत खाता है लोग उसको बहुत ह़ब्शी समझते हैं उसको बैल जानते हैं।

10. अगर लड़का हो तो सफेद रंग के कपड़े की रग़बत उसके दिल में पैदा करो। और रंगीन और तकल्लुफ से लिबास से उसको नफरत दिलाओ कि ऐसे कपड़े लड़कियां पहनती हैं, तुम माशाअल्लाह मर्द हो, हमेशा उसके सामाने ऐसी बातें किया करें।

11. अगर लड़की हो तो जब भी ज़ियादा माँग चोटी बहुत तकल्लुफ़ के कपड़ों की आ़दत मत डालें।

12. उसकी सब ज़िदें पूरी मत करें कि उससे मिज़ाज बिगड़ जाता है।

13. चिल्ला कर बोलने से रोको खास कर अगर लड़की हो तो चिल्लाने पर खूब डाँटें। वरना बड़ी हो कर वही

आ़दतें ख़राब हो जायेंगी।

14. जिन बच्चों की आदतें ख़राब हैं या पढ़ने लिखने से भागते हैं या तकल्लुफ़ के खाने कपड़े के आदी हैं उनके पास बैठने से खेलने से उनको बचाओ।

15. इन बातों से उसको नफ़रत दिलाते रहें जैसे गुस्सा, झूठ बोलना, किसी को देख कर जलना या हिर्स करना, चोरी, चुग़ली खाना, बे फायदा बहुत बातें करना, बे बात हसना या बहुत ज़ियादा हंसना, धोका देना, भली बुरी बात का सोचना, और जब उन बातों से कोई बात हो जाए फौरन उसको रोकें टोकें।

16. अगर कोई चीज़ तोड़ फोड़ दे या किसी को मार बैठे मुनासिब सज़ा दो ताकि फिर ऐसा न करे ऐसी बातों में प्यार दुलार हमेशा को बच्चों को खो देता है।

17. बहुत सवेरे मत सोने दो।

18. सवेरे जागने की आदत डालो।

19. जब सात साल की उम्र हो जाए नमाज़ की आ़दत डालो।

20. जब मकतब में जाने के क़ाबिल हो जाएं अव्वल कुर्आन मजीद पढ़ाओ।

21.जहां तक हो सके दीनदार उस्ताद से पढ़ाओ।

22. मकतब में जाने पर कोई भी रिआ़यत मत करो।

23. किसी–किसी वक़्त उनको नेक लोगों की हिकायतें सुनाया करो।

24. उनको ऐसी किताब मत देखने दो जिन में आ़शिक़ी मअ़शूक़ी की बातें हों या शरअ़ के ख़िलाफ़ मज़मून या और बेहूदा क़िस्से या ग़ज़लें वग़ैरह हों।

25. ऐसी किताबें पढ़ाओ जिनमें दीन की बातें और दुन्या का ज़रूरी कारवाई आ जाए।

26. मकतब से आ जाने के बाद किसी क़द्र दिल बहलाने के लिए उनको खेलने की इजाज़त दो ताकि तबीयत कुन्द न हो लेकिन खेल ऐसा हो कि जिससे कोई गुनाह हो चोट लगने का अन्देशा न हो।

27. आतिशबाज़ी या बाजा या फुज़ूल चीज़ें लेने के लिए पैसे मत दो।

28. खेल तमाशे दिखलाने की आदत मत डालो।

29. औलाद को ज़रूर कोई ऐसा हुनर सिखायें जिससे ज़रूरत और मुसीबत के वक़्त चार पैसे हासिल करके अपना और अपने बच्चों का गुज़ारा कर सके।

30. लड़कियों को इतना सिखलाओ कि ज़रूरी ख़त और घर का हिसाब किताब लिख सकें।

31. बच्चों की आदत डालो कि अपना काम अपने हाथ से किया करें अपाहिज और सुस्त न हो जावें उनको कहो कि रात को बिछौना अपने हाथ से बिछायें सुब्ह

को सवेरे उठ कर तैह करके एहतियात से रख दें कपड़ों की गठरी अपने इन्तिज़ाम में रखें उधड़ा फटा खुद सी लिया करें, कपड़े ख़्वाह मैले हों उजले हों ऐसी जगह रखें जहां कीड़े चूहे का अन्देशा न हो धोबन को ख़ुद गिन कर दें और लिख लें और गिन कर पड़ताल करके लें।

32. लड़कियों को ताकीद करो कि जो ज़ेवर तुम्हारे बदन पर है रात को सोने से पहले और सुब्ह को उठ कर देख भाल लिया करें।

33. लड़कियों से कहें कि जो काम खाने, पकाने, सीने, पिरोने, कपड़े रंगने, बुनने का घर में हुआ करें उसमें ग़ौर करके देखा करें कि क्योंकर हो रहा है।

34. जब बच्चे से कोई बात ख़ूबी की ज़ाहिर हो उस पर खूब शाबाशी दो प्यार करो बल्कि उसको इन्आ़म दो ताकि उसका दिल बढ़े और जब उसकी कोई बुरी बात देखो अव्वल तन्हाई में उसको समझाओ कि देखो बुरी बात है देखने वाले दिल में क्या कहते होंगे और जिस–जिस को ख़बर होगी वह दिल में कैसा कहेगा, ख़बरदार फिर ऐसा मत करना नेक बख़्त लड़के ऐसा नहीं किया करते और फिर वही काम कर ले तो मुनासिब सज़ा दो।

35. माँ को चाहिए कि बच्चे को बाप से डराती रहे।

36. बच्चे को कोई काम छुपा कर मत करने दो खेल हो या खाना हो या कोई और काम वह छुपा कर करे तो समझाओ कि वह उसको बुरा समझता है सो वह अगर बुरा है जैसे खाना पीना तो उससे कहो कि सबके सामने खाये पिये।

37. कोई काम मेहनत का उसके ज़िम्मे मुक़र्रर कर दो जिससे सेहत और हिम्मत रहे सुस्ती न आने पाये मसलन लड़कों के लिए वर्ज़िश करना एक आधा मील चलाना, और लड़कियों के लिए चक्की या चरख़ा चलाना ज़रूरी है उसमें ये भी फायदा है कि इन कामों को समझेगी।

38. चलने में ताकीद करो कि बहुत जल्दी न चले, निगाह ऊपर उठा कर न चले।

39. उसको आजज़ी इख़्तियार करने की आ़दत डालो, ज़ुबान से चाल से बर्ताव से शेख़ी न बधारने पाये यहां तक कि अपने हम उम्र बच्चों में बैठ कर अपने कपड़े या मकान या ख़ानदान या किताब व क़लम व दवात तख़्ती तक की तारीफ़ न करने पायें।

40. कभी–कभी उसको दो या चार पैसे दे दिया करो कि अपनी मरज़ी के मुवाफिक़ ख़र्च किया करे मगर उसको ये आदत डालो कि कोई चीज़ तुमसे छुपा कर न ख़रीदे।

41. उसको खाने का तरीक़ा और महफिल में उठने बैठने का तरीक़ा सिखलाओ।

(बहेश्ती ज़ेवर से ग्रहीत)

❖❖❖

फ़र्ज़ वाजिब वग़ैरा का बयान

—हिन्दी लिपिः फ़ौजिया सिद्दीक़ा

प्रश्नः— फ़र्ज़ वाजिब सुन्नत नफ़्ल किसे कहते हैं, और इन में क्या क्या फ़र्क़ हैं?

उत्तरः– फ़र्ज़ उसे कहते हैं जो क़तई दलील से साबित हो यानी उसके सुबूत में कोई शुब्हा न हो उस की फर्जियत का इनकार करने वाला काफिर हो जाता है और बिला उज़्र छोड़ने वाला फासिक़ और अज़ाब का मुस्तहिक़ होता है। सुन्नत उस काम को कहते हैं जिसको रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने या सहाबा किराम ने किया हो या करने का हुक्म फ़रमाया हो। नफ़्ल उन कामों को कहते हैं जिन की फ़ज़ीलत शरीयत में साबित हो, उनके करने में सवाब और छोड़ने में अज़ाब ना हो, उसे मुस्तहब, मनदूब और ततव्वोअ़ भी कहते हैं।

प्रश्नः– फ़र्ज़ की कितनी क़िस्में हैं?

उत्तरः– दो क़िस्में हैं, फ़र्ज़े ऐन और फर्ज़े क़िफ़ाया। फ़र्ज़े ऐन उस फ़र्ज़ को कहते हैं जिस का अदा करना हर शख़्स पर ज़रूरी हो और बिला उज़्र छोड़ने वाला फ़ासिक़ और गुनहगार हो। और क़िफ़ाया वह फ़र्ज़ है जो एक दो आदमियों के अदा कर लेने से सब के ज़िम्मे से उतर जाये और कोई अदा ना करे तो सब के सब गुनहगार हों।

प्रश्नः– सुन्नत की कितनी क़िस्में हैं?

उत्तरः– सुन्नत की दो क़िस्में हैं— सुन्नते मुअक्कदा और सुन्नते ग़ैर मुअक्कदा, सुन्नते मुअक्कदा उस काम को कहते हैं जिसे हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने हमेशा किया हो या करने के लिए फ़रमाया हो और हमेशा किया गया हो यानी बग़ैर उज़्र कभी न छोड़ा हो ऐसी सुन्नतों को बग़ैर उज़्र छोड़ देना गुनाह है। और छोड़ने की आदत कर लेना सख़्त गुनाह है। और सुन्नते गैर मुअक्कदा उसे कहते हैं जिसे हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने अकसर किया हो, लेकिन कभी कभी बग़ैर उज़्र छोड़ भी दिया हो। इन सुन्नतों के करने में मुस्तहब से ज़ियादा सवाब है, और छोड़ने में गुनाह नहीं। इन सुन्नतों को सुनने ज़वाइद भी कहते हैं।

प्रश्नः– मुबाह किसे कहते हैं?

उत्तरः– मुबाह उस काम को कहते हैं जिसके करने में सवाब न हो और न करने में गुनाह और अज़ाब न हो।

(तालीमुल इस्लाम से ग्रहीत)

❖❖❖

नदवतुल उलमा
पोस्ट बाक्स न0 93, टैगोर मार्ग,
लखनऊ -226007 (भारत)

ندوۃ العلماء
پوسٹ بکس ۹۳ - ٹیگور مارگ
لکھنؤ - ۲۲۶۰۰۷ (الہند)

दिनांक 25.04.2020 तारीख

अहले खैर हज़रात से!

अल्लाह तआला का शुक्र व एहसान है कि हज़रत मौलाना सैय्यद मो0 राबे हसनी नदवी दामत बरकातुहुम की सरपरस्ती में दारुल उलूम नदवतुल उलमा अपनी इल्मी व दीनी तालीमी व तरबियती ख़िदमत अंज़ाम दे रहा है, और उन बहुमूल्य सिद्धान्तों एवं नियमों को सीने से लगाये हुए है जिनके लिए नदवतुल उलमा को स्थापित किया गया था, यानी नये ज़माने में इस्लाम की मुअस्सिर और सही तर्जुमानी, दीन व दुन्या की व्यापकता और इल्म व रुहानियत के एकता की कोशिश, फितन–ए–लादीनियत और ज़ेहनी इरतिदाद का मुकाबला, इस्लाम पर एतिमाद और उलूमेइस्लामिया की बरतरी व इम्तियाज़ का ऐलान व इज़हार, दीने हक से वफादारी और शरीअत पर इस्तिक़ामत।

आपसे हमारी अपील है कि वक़्त की इस ज़रूरत और दारुल उलूम नदवतुल उलमा की इफ़ादियत को समझते हुए पूरी फराख़दिली, फ़य्याज़ी और हिम्मत से काम ले कर इन तमाम कामों में भरपूर तआउन व मदद फरमायें कि हिन्दुस्तान में दीन के किलों की हिफ़ाज़त का इससे बेहतर रास्ता और इससे ज़ियादा पायदार कोई सदक़–ए–जारिया नहीं।

जैसा कि आप को मालूम है कि रमज़ानुल मुबारक के मौक़े पर दारुल उलूम नदवतुल उलमा के असातिज़ा, सुफ़रा व मुहस्सिलीन आप हज़ारात की ख़िदमत में हाज़िर हो कर सद्क़ात व जक़ात व चन्दे की वसूलयाबी का काम अंजाम देत हैं लेकिन इस वक़्त पूरे मुल्क में क्रोना वायरस की वजह से लॉकडाउन है, ऐसे हालात में सफ़र करना ना मुम्किन है इसलिए आप के चन्दे की वसूलयाबी बैंक द्वारा ही मुम्किन है।

इसलिए आप हज़रात से अपील है कि अपने सद्क़ात व अतियात चेक/ड्राफ्ट और ऑन लाइन, नदवतुल उलमा के खातों में भेजें ऐसे नाज़ुक और मुश्किल हालात में नदवतुल उलमा के साथ आप का तआउन निहायत अहमियत रखता है, अल्लाह तआला हम सब की कोशिशों को कबूल फ़रमाये और उनको हमारे लिए ज़ख़ीर–ए–आख़िरत बनाये। आमीन

(मौलाना) मुहम्मद हमज़ा हसनी नदवी
नायब नाज़िम नदवतुल उलमा

(मौलाना डॉ0) तक़ीउद्दीन नदवी
मोतमद तालीम नदवतुल उलमा

(प्रोफेसर) अतहर हुसैन
मोतमद माल नदवतुल उलमा

(मौलाना डॉ0) सईदुर्रहमान आज़मी नदवी
मोहतमिम नदवतुल उलमा

नोटः चेक/ड्राफ्ट पर केवल यह लिखें:
NADWATUL ULAMA
और इस पते पर भेजें:
NAZIM NADWATUL ULAMA
Nizamat Office, Nadwatul Ulama.
Tagore Marg, Lucknow-226007 (UP)

बरा–ए–करम अतियात भेजने के बाद रसीद हासिल करने के लिए नं0 **7275265518** पर इत्तिला ज़रूर करें।

नदवतुल उलमा
A/C No. 10863759711 (अतियात)
A/C No. 10863759766 (ज़कात)
A/C No. 10863759733 (तअ़मीर)
SBI MAIN BRANCH, LUCKNOW
(IFSC: SBIN0000125)

नोटः नदवतुल उलमा, लखनऊ को दिये गये चन्दे को **Section 80G income Tax act 1961** के तहत छूट प्राप्त होगी।
Online Donation Link: https://www.nadwa.in.donation/ Website: www.madwa.in, Email: nizamat@nadwa.in

उर्दू सीखये –इदारा

नीचे लिखी उर्दू के अशआर पढ़िये,
मुश्किल आने पर बाद में लिखे हिन्दी अशआर से मदद लीजिए

रब का शुक्र अदा कर भाई
जिसने प्यारी गाय बनाई
दाना भूसा उसे खिलाया
रब ने उससे दूध दिलाया
दूध मलाई केक जो खाया
खूब मजा खाने में आया
दूध दही और मट्ठा मस्का
दे न खुदा तो किसके बस का
अक़्ल ने सबकी बात ये मानी
चौपायों की गाय है रानी

رب کا شکر ادا کر بھائی
جس نے پیا ری گائے بنائی
دانہ بھوسا اسے کھلایا
رب نے اس سے دودھ دلایا
دودھ ملائی کیک جو کھایا
خوب مزہ کھانے میں آیا
دودھ دہی اور مٹّھا مسکا
دے نہ خدا تو کس کے بس کا
عقل نے سب کی بات یہ مانی
چوپایوں کی گائے ہے رانی